ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

मार्गशीर्ष २०८१ दिसम्बर २०२४

विशिष्ट बाल प्रतिभा अंक

₹ ३०

प्रभु से मिली विशिष्टता की करके पहचान। नन्हे तारे रवि बनें, जगमग करें जहान।।

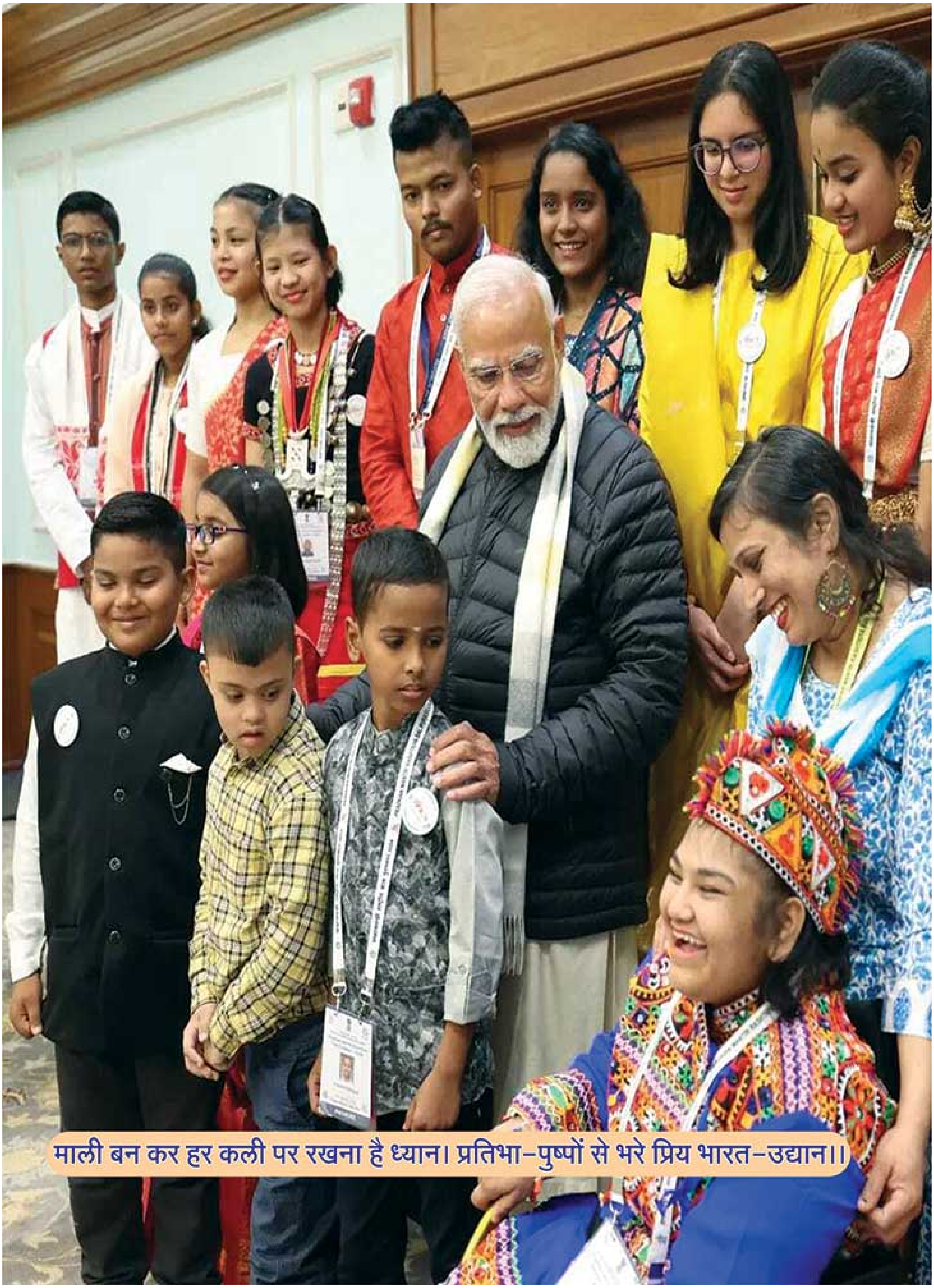

माली बन कर हर कली पर रखना है ध्यान। प्रतिभा–पुष्पों से भरे प्रिय भारत–उद्यान।।

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र
(विद्या भारती से सम्बद्ध)

मार्गशीर्ष २०८१ ▪ वर्ष ४५
दिसम्बर २०२४ ▪ अंक ०६

संरक्षक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

संपादक
गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक
नारायण चौहान

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

हमारे राष्ट्र में असाधारण प्रतिभाशाली बच्चों की अत्यन्त उज्ज्वल परम्परा है। अपनी माता पार्वती की सेवा और सुरक्षा ही जिनकी उत्पत्ति का हेतु था ऐसे भगवान श्री गणेश प्रथम पूज्य ही नहीं, प्रथम बालवीर भी हैं। पौराणिक काल में लव, कुश, ध्रुव, प्रह्लाद, अभिमन्यु का अतुल्य बाल्यकाल आज भी सबके लिए प्रेरक हैं। श्रीकृष्ण और हनुमान ने बचपन में ही अपने कार्यों से भारतीय संस्कृति के महानायक होने का प्रमाण दे दिया था। ज्ञानेश्वर और शंकराचार्य बाल्यकाल में ही अध्यात्म की श्रेष्ठतम उपलब्धि प्राप्त कर चुके थे। अष्टावक्र, नचिकेता, आरुणि, उपमन्यु, चारों गुरुपुत्रों ने अध्यात्म, गुरुभक्ति व धर्मरक्षा के अमिट अध्याय रचे। वीर शिवा का शौर्य या डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार का राष्ट्रप्रेम बचपन से ही उजागर हो चुका था।

असंख्य नाम हैं, क्या छोड़ें क्या याद करें? लेकिन यह उज्ज्वल परम्परा आज भी विद्यमान है। जीवन के विविध क्षेत्रों में वर्तमान में जो जीवित, जाग्रत, ज्वलंत उदाहरण बनकर अपनी विशिष्ट प्रतिभाओं से जगमगा रहे हैं ऐसे कुछ बालक-बालिकाओं के परिचय और विशेष उपलब्धियों को इस अंक में संजोया गया है।

प्रतिभाएँ परमात्मा प्रदत्त होती है पर उनका पोषण समाज और परिवार को करना होता है। यह समाज का कर्त्तव्य है। यह सत्य है कि प्रतिभा का पौधा परिस्थितियों के पत्थरों को फोड़कर भी पनप ही जाता है लेकिन परिस्थितियों की प्रतिकूलता में उसका विकास, संभावनाओं से कम रह जाता है। इसलिए प्रतिभाओं का प्रोत्साहन व पुरस्कार करना समाज का दायित्व है। यह कर्त्तव्य मा. प्रधानमंत्री श्री. नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से महिला व बाल विकास मंत्री श्रीमती स्मृति ईरानी ने अपने मंत्रालय के माध्यम से ऐसी विशिष्ट प्रतिभाओं को महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के हाथों 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' प्रदान करवाकर समाज को प्रेरित किया है। पुरस्कार प्रतिभा की प्रतिष्ठा है परिणाम नहीं। परिणाम तो उस प्रतिभा से परिवेश में आने वाला सकारात्मक परिवर्तन है। इसलिए 'प्रसिद्धि' 'परमसिद्धि' कदापि नहीं है लेकिन पुरस्कार का अर्थ ही है आगे बढ़ाने वाला प्रोत्साहन। कठिनाइयों को चुनौतियाँ बनाकर सफलता के शिखर छूने वाले ये बाल चरित्र निश्चय ही आपको प्रेरित करेंगे।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। आभार ।।

देवपुत्र के इस विशिष्ट बाल प्रतिभा अंक में वर्ष २०२४ में, भारत की महामहिम राष्ट्रपति सुश्री द्रौपदी मुर्मू जी द्वारा 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' से पुरस्कृत, समाज जीवन के विविध क्षेत्रों के, राष्ट्र के विभिन्न प्रान्तों महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के माध्यम से चुने गए असाधारण प्रतिभाशाली बच्चों की सत्य कहानियाँ प्रस्तुत हैं।

इस सामग्री को आपके लिए रोचक एवं प्रेरक ढंग से तैयार किया है विख्यात बालसाहित्य सर्जक एवं वीर बालकों पर सतत लिखने वाले **श्री. रजनीकांत जी शुक्ल** ने। 'देवपुत्र' अपने पाठकों के लिए उनकी इस अमूल्य रचनात्मक भेंट के लिए हृदय से आभारी है।

।। अनुक्रमणिका ।।

आलेख

- नन्ही कथावाचिका : अनुष्का पाठक ०५
- बाल पर्वतारोही : आर सूर्यप्रसाद ०७
- बाल बैज्ञानिक : आर्यन सिंह १०
- रचनात्मकता की प्रतिमा : हेतवी कांतिभाई खिमसुरिया १२
- पखावज वादक : अरिजीत बनर्जी १५
- बैडमिंटन तारिका : आदित्या यादव १७
- बाल बलिदानी : आदित्य विजय ब्रह्मणे १९
- शिक्षा-ज्योति जलाती : गरिमा २१
- प्रकृति के सपूत : संयम मजूमदार २३
- कुचिपुड़ी नृत्यांगना : लक्ष्मी प्रिया २५

आलेख

- बाल गणितज्ञ : अरमान उभरानी २८
- शतरंज की नन्ही खिलाड़ी : चार्वी अनिल कुमार ३०
- संगीत साधक : इशफ़ाक़ बट्ट ३२
- अन्याय के विरुद्ध : ज्योत्सना अख्तर ३४
- समाज सुधारक : अवनीश तिवारी ३७
- बैडमिंटन की राजकुमारी : जेसिका नेई सारिंग ४०
- नवाचारी : सुहानी चौहान ४३
- किलकारी के किरीट : मोहम्मद हुसैन ४५
- जूडो चैम्पियन : लिनथोई चनंबम् ४८

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।

विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास बैंक - स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **''मन्दसौर संजीत मार्ग SSM''** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

नन्हीं कथावाचिका : अनुष्का पाठक

अनुष्का की अवस्था अभी मात्र आठ वर्ष की है। हमारे देश के सनातन धर्म में जिन सोलह संस्कारों की बात की जाती है। इसमें अंतिम संस्कार से जहाँ लोग परिचित हैं वहीं पहले संस्कार से उतने ही अपरिचित हैं। पहला संस्कार गर्भाधान संस्कार कहा जाता है। यानि कि जिस दिन बच्चा गर्भ में आता है उसी समय से उसके संस्कार की शिक्षा प्रारम्भ हो जाती है। गर्भ में ही अपनी माँ कयाधु से भगवत् भक्ति की शिक्षा ग्रहण करने वाले प्रह्लाद हों, अपने पिता अर्जुन से चक्रव्यूह भेदन की कला को सीखने वाले अभिमन्यु हों अथवा गर्भ से ही अपने पिता को वैदिक ऋचाओं के त्रुटिपूर्ण उच्चारण के लिए टोकने वाले अष्टावक्र हों। इन सबकी पौराणिक कथाएँ हमने कभी न कभी सुनी हैं।

वर्तमान समय में अनुष्का पाठक के जीवन को देखें तो आश्चर्य होता है। घर के लोग बताते हैं कि मात्र साढ़े पाँच वर्ष की आयु में अनुष्का अपने दादाजी के साथ कुशीनगर के पास रामकोला नामक स्थान पर मंदिर पर अपने पिताजी के द्वारा कही जाने वाली श्रीमद्भागवत कथा सुनने गई थीं। वहाँ से वापस आकर उन्होंने जैसी की तैसी वही कथा अपने ताऊ जी को सुना दी तो सब चकित रह गए। सबकी प्रशंसा के बीच अनुष्का ने अनुरोध किया कि कल मैं यही कथा ऐसे ही उन लोगों को सुनाऊँगी जैसे आप लोगों को सुनाई है। यही हुआ हजारों की भीड़ के बीच अनुष्का ने वही कथा उन सबको सुना दी जो एक दिन पहले वह सुनकर गई थी।

उस दिन के बाद आत्मविश्वास से भरी अनुष्का अपने पिता के साथ कथा में जाने लगी। धीरे-धीरे लोगों ने देखा कि मात्र छः सात वर्ष की नन्हीं बच्ची न केवल संस्कृत के कठिन श्लोकों का शुद्ध और स्पष्ट उच्चारण कर रही थी बल्कि उनके अर्थ और व्याख्या भी बता रही थी। वह धर्म के गूढ़ रहस्यों को बहुत सरल ढंग से बिना किसी की सहायता के रोचक कहानी के माध्यम से उन्हें समझा भी रही थी। वे गद्गद हो गए यह उनके लिए किसी चमत्कार से कम नहीं था।

सामाजिक संचार माध्यमों (सोशल मीडिया) के इस जमाने में इन सब बातों के प्रसार में देर ही कितनी लगती। अब तो जब कभी भी उनके पिता को कथा भागवत के लिए बुलावा आता तो बुलाने वालों का आग्रह रहता कि अनुष्का को अवश्य लाइएगा। उनके पिता कहते अभी तो वह बच्ची है। अधिक देर तक नहीं बोल पाएगी। थक जाएगी। वे कहते कोई बात नहीं जितनी भी देर सही हम उन्हें सुनना चाहेंगे। एक घंटा नहीं तो आधा घंटा ही सही। लोग सुनते और प्रशंसा करते कि भाई क्या आश्चर्य है।

अनुष्का के पिता कहते हैं कि अनुष्का का उच्चारण शुद्ध व स्पष्ट है। उनका हिन्दी लेख बहुत अच्छा है। घर के लोग बताते हैं आश्चर्य की बात यह है कि अनुष्का ने वर्णमाला लिखकर नहीं सीखी बल्कि उससे पहले धार्मिक ग्रंथों को पढ़ना प्रारंभ कर दिया था। कोई भी ग्रंथ अनुष्का ने पढ़ा तो वह उसको स्मरण हो जाता था। आप उससे उसकी कहानी उसके मुँह से सुन सकते हैं। अनुष्का के दादाजी कहते हैं कि अनुष्का लक्ष्मी है। मुझे तो लगता है कि इसने

गर्भ में रहते हुए ही अपने पिता से रामकथा और श्रीमद्भागवत महापुराण सुनकर अभिमन्यु की तरह याद कर लिए हैं।

अनुष्का की दादी कहती है कि अपनी लगन से अनुष्का ने यह स्थान पाया है। अनुष्का को अपनी आयु के बच्चों के साथ खेलना–कूदना रुचिकर नहीं उसके अनुसार मेरे मित्र और सखा तो बस भगवान हैं। घर में वातावरण भी वैसा ही था जब भगवत कथा में रुचि बढ़ी तो अनुष्का घर पर उपलब्ध धार्मिक ग्रंथों को पढ़ने लगीं। उन्हें पढ़कर उसे अपने ढंग से अपने अनुसार कापी में लिखने लगीं। इस प्रक्रिया में वह सारा कथानक उसे याद हो जाता।

अनुष्का भी रुक–रुककर अपनी विशिष्ट शैली में जब कथा कहतीं तो सुनने–देखने वाले मंत्रमुग्ध हो जाते। धीरे–धीरे इस नन्हीं कथावाचक की कीर्ति चारों ओर फैलनी प्रारंभ हो गई और उसकी कथा सुनने वाले प्रशंसकों का घेरा और माँग बढ़ने लगी।

यहाँ तक कि अब उसके आयोजन की तिथियाँ आगामी अनेक महीनों तक आरक्षित रहने लगीं। देश के सभी हिन्दीभाषी राज्यों में उनके जबरदस्त प्रशंसक व अनुयायी हो गए। उनके यू–ट्यूब चैनल के वीडियो प्रसारित होने लगे।

ऐसे में ही एक दिन जब भारतीय महिला बाल विकास मंत्रालय भारत सरकार की ओर से ऐसे प्रतिभाशाली बच्चों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार दिए जाने के बारे में पता चला तो लोगों ने कहा कि अनुष्का जैसी बाल प्रतिभा को तो इस राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित होना चाहिए। उन्होंने आवेदन किया और आशानुरूप जब नामों की घोषणा हुई तो इस पुरस्कार के विजेता उन्नीस बच्चों में एक नाम अनुष्का का भी था।

अपने पिता जी के साथ अनुष्का अपने विशिष्ट पहनावे में जब देश की राजधानी दिल्ली के अशोक होटल पहुँची तो वहाँ उसके साथ उन अठारह विजेता बच्चों के माता–पिता भी थे। दिल्ली के विज्ञान भवन में राष्ट्रपति महोदया ने उन्हें राष्ट्रीय प्रधानमंत्री पुरस्कार प्रदान किया। देश के प्रधानमंत्री जी ने उन्हें अपने निवास पर बुलाकर व्यक्तिगत भेंट की और देश की संसद में भी इन सभी बच्चों को मिलने के लिए आमंत्रित किया गया।

सबसे अधिक आनन्द तो गणतंत्र दिवस की कर्त्तव्य पथ पर निकलने वाली परेड में आया जहाँ जीप पर सवार उन्हें देखकर सारे देशवासियों ने प्रशंसा की। दिल्ली में बिताए गए ये दिन उन सबके लिए कभी न भुलाए जाने वाले थे।

नन्हे दोस्तो,

लगन लगा लो एक दिशा में, बढ़ते ही जाओ।
नहीं दूर है लक्ष्य कोई भी चढ़ते ही जाओ।
रुचि अपनी पहचान, बढ़ा दो खुद को राहों में,
बता रहीं इनकी कहानियाँ, जो चाहे पाओ।।

✲

बाल पर्वतारोही : आर. सूर्य प्रसाद

आंध्रप्रदेश राज्य के अनन्तपुर जिले का नगर क्षेत्र अपने विशिष्ट महत्त्व के लिए बहुत पुराने समय से जाना जाता रहा है। आँध्रप्रदेश के पहले मुख्यमंत्री और बाद में देश के राष्ट्रपति बने नीलम संजीव रेड्डी यहीं के थे। हिन्दू आध्यात्मिक नेता सत्य साँई बाबा का जन्म भी यहीं हुआ था।

इसी शहर के अशोक नगर क्षेत्र में रहने वाले राघे शिव प्रसाद और प्रमिला के दो बेटे हैं अर्जुन और सूर्य प्रसाद। दोनों में दो वर्ष का अंतर है। उनमें से छोटे सूर्य प्रसाद बड़े कमाल की लगनशील और धुन के धुनी हैं। बचपन से ही उनको रोमांचक कार्यों को करने की लगन लग गई थी। मात्र पाँच वर्ष की आयु में उन्हें एक एडवेंचर वीडियो को देखकर प्रेरणा मिली कि उन्हें ताइक्वांडो का प्रशिक्षण लेना चाहिए। उनके पिता ने उनकी इच्छा का सम्मान करते हुए उन्हें अशोक नगर के ही एक उद्यान में चलने वाली ताइक्वांडो कक्षा में प्रवेश करवा दिया। अपनी लगन और परिश्रम के कारण उन्होंने शीघ्र ही ताइक्वांडो में कुशलता प्राप्त कर ली और अनन्तपुर में होने वाली जिलास्तरीय ताइक्वांडो प्रतियोगिता में सूर्य प्रसाद ने प्रथम स्थान प्राप्त कर लिया। इसके बाद राज्य स्तरीय ताइक्वांडो प्रतियोगिता में भी वे जीते और फिर उन्होंने बीस नवम्बर २०२१ को बैंगलूरू में होने वाली राष्ट्रीय ताइक्वांडो प्रतियोगिता में अपनी आयु और वजन के अनुसार बीस किलोग्राम से कम वजन वाले वर्ग में भाग लिया और बड़ी ही आसानी से अपने प्रतिद्वन्द्वियों को परास्त करके इसके प्रतियोगिता के स्वर्ण पदक पर अधिकार कर लिया।

इसी समय सूर्य प्रसाद ने एक दिन टीवी पर एक ऐसा विज्ञापन देखा जिसमें पर्वतारोहण के रोमांचक दृश्य थे। बस फिर क्या था सूर्य प्रसाद को धुन लगी कि अब तो मैं पर्वतारोहण करूँगा। उन्होंने अपना यह निश्चय जब माता–पिता को बताया तो वे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने सूर्य प्रसाद का न केवल साहस बढ़ाया बल्कि सूर्य प्रसाद को तेलंगाना के यदाद्री भुवनगिरि जिले की रॉक क्लाइंबिंग अकादमी में पर्वतारोहण के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में प्रवेश दिलवा दिया।

वहाँ सूर्य प्रसाद की भेंट कुशल पर्वतारोहण प्रशिक्षक शेखर बाबू से हुई। जिन्होंने सूर्य प्रसाद को कम समय में ही पर्वतारोहण के पर्याप्त कौशल सिखा दिए। इसी के बाद वे कडप्पा जिले के गांडीकोटा में पर्वतारोहण के एक प्रशिक्षण केन्द्र में एक महीने के ऊँची पहाड़ी पर चढ़ाई के प्रशिक्षण के लिए गए। उन्होंने बहुत कम समय में यह प्रशिक्षण भी पूरा कर लिया। इसके बाद सूर्य प्रसाद देश के लद्दाख क्षेत्र में प्रशिक्षण के लिए गए जहाँ प्रशिक्षण के बीच उन्होंने दक्षिणी ध्रुव पर्वत की चोटी पर चढ़ाई की। इसके बाद उन्होंने मन में कुछ अलग करने की ठान ली।

इस क्रम में उन्हें पता चला कि भूमध्य रेखा के ठीक दक्षिण में स्थित एक पूर्वी अफ्रीकी देश तंजानिया

है, जहाँ संसार के सात सबसे ऊँचे पर्वत शिखरों में से एक अफ्रीका महाद्वीप का सबसे ऊँचा पर्वत किलिमंजारो है जिसकी ऊँचाई ५८९५ मीटर है।

तंजानिया का यह माउंट किलिमंजारो पर्वतारोहियों के बीच काफी लोकप्रिय है। जब भी कोई नया उत्साही पर्वतारोही पर्वतारोहण का विचार करता है तो वह इसका आरंभ किलिमंजारो से ही करना चाहता है क्योंकि विश्व के सात ऊँचे पर्वतों में से इसकी चढ़ाई सबसे सुगम मानी जाती है।

विश्व के अन्य पर्वतों की भाँति किलिमंजारो किसी पर्वत श्रृंखला का भाग न होकर एक स्वतंत्र पर्वत है। अनुमान है कि इस पर्वत का निर्माण ज्वालामुखी गतिविधियों के कारण हुआ था। यह तीन अलग–अलग ज्वालामुखियों कीबो मावेंजी और शिरा से मिलकर बना एक संयुक्त परतदार लावे का पर्वत है। इसी कीबो ज्वालामुखी की सबसे ऊँची चोटी उहुरू है। जिस पर लोग चढ़ते हैं। सूर्य प्रसाद ने भी इसी पर चढ़ाई करने की योजना बनाई। उन्होंने अपने माता पिता को जब यह इच्छा बताई तो उन्होंने इसकी व्यवस्था कर दी। सूर्य प्रसाद अपने कोच पुरुषोत्तम के साथ तंजानिया की यात्रा पर निकल पड़े।

इस पर्वत पर नीचे से ऊपर और फिर ऊपर से नीचे आने में सामान्यतया पाँच से नौ दिन लग जाते हैं। इस पहाड़ के निचले भाग में वर्षभर तापमान अधिक रहता है जबकि पहाड़ की चोटी बर्फ से ढकी रहती है।

किलिमंजारो पर्वत ७५६ वर्ग किलोमीटर में फैले किलिमंजारो राष्ट्रीय उद्यान में स्थित है। इस उद्यान को यूनेस्को ने विश्व धरोहर स्थल घोषित किया है। यह संसार के उन गिने चुने स्थानों में से एक है जहाँ लगभग हर प्रकार का इकोलॉजिकल सिस्टम उपस्थित है। यानि कि खेती के योग्य भूमि से लेकर वर्षा वन और रेगिस्तान से लेकर झमाझम वर्षा तक सब कुछ यहाँ उपस्थित है।

वर्ष २०२२ में सूर्य प्रसाद ने अपने कोच पुरुषोत्तम के साथ अफ्रीका महाद्वीप में तंजानिया देश के इसी पहाड़ किलिमंजारो पर चढ़ाई करने का निश्चय किया। इस चोटी तक जाने के सात मुख्य मार्ग हैं। किन्तु यह इतना आसान भी नहीं है। इस पर अकेले चढ़ाई नहीं की जा सकती है। सूर्य प्रसाद ने अपने कोच पुरुषोत्तम के साथ उहुरू चोटी के रास्ते पर एक अप्रैल २०२२ को चढ़ाई प्रारम्भ कर दी।

इस चढ़ाई के दौरान नीचे अत्यधिक गर्मी और ऊपर पहुँचकर अत्यधिक सर्दी दोनों मौसमों की मार सूर्य प्रसाद को झेलनी पड़ी। साथ ही बीच–बीच में होने वाली वर्षा और कुछ स्थानों पर कमर तक गहरी बर्फ भी उन्हें मिली। इन सबके चलते भी सूर्य प्रसाद ने साहस नहीं हारा और उत्साहपूर्वक पर्वतारोहण करते हुए बिना डरे सारी बाधाओं को पार कर अपने इच्छित लक्ष्य तक पहुँचने में सफलता पाई।

अपने अभियान के श्रीगणेश से पाँचवें दिन वे अपने लक्ष्य पर थे। वहाँ पहुँचकर सूर्य प्रसाद ने अपने साथ लेकर गए भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को उसकी चोटी पर लहराया और अपनी सामाजिक सशक्तिकरण के प्रति प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करते हुए प्रतिष्ठित भारतीय विभूतियों के चित्रों को वहाँ प्रदर्शित किया।

जिस समय सूर्य प्रसाद ने अफ्रीका के सबसे ऊँचे पर्वत की चोटी पर तिरंगा लहराया उस समय उनकी आयु केवल आठ वर्ष सात दिन की थी। इस चोटी पर लकड़ी की पेटी में एक पुस्तक रखी है। जिसमें यहाँ पर चढ़ाई करने वाले पर्वतारोही अपने अनुभव लिखते हैं। जब तंजानियाई अधिकारियों को सूर्य प्रसाद और उसकी इस आयु के बारे में पता चला तो उन्होंने इसे वहाँ पर अंकित कर लिया। लौटते हुए उन्हें उतरने में केवल तीन दिन ही लगे। उनकी इन

उपलब्धियों और सफलताओं का उल्लेख संचार माध्यमों में हो रहा था कि इसी दौरान प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार २०२४ के लिए असाधारण कार्य करने वाले पाँच से अट्ठारह वर्ष के बीच के उन बच्चों के आवेदन माँग गए, जिन्होंने वीरता, कला और संस्कृति, नवाचार, विज्ञान प्रौद्योगिकी, सामाजिक सेवा या खेल में कुछ असाधारण कार्य किए हों।

अफ्रीका महाद्वीप के इस सबसे ऊँचे पर्वत शिखर के पर्वतारोहण अभियान को सूर्य प्रसाद ने मात्र आठ वर्ष सात दिन की कम आयु में सफलतापूर्वक पूरा किया था। सूर्य प्रसाद की इस असाधारण उपलब्धि को देखते हुए उनका नाम महिला बाल विकास मंत्रालय नई दिल्ली की चयन समिति ने देशभर के चयनित बच्चों की सूची में अंकित कर लिया।

देश की राष्ट्रपति महोदया द्रौपदी मुर्मू ने राजधानी दिल्ली के विज्ञान भवन में महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती स्मृति ईरानी की उपस्थिति में आर. सूर्य प्रसाद को यह पुरस्कार प्रदान किया और देश के प्रधानमंत्री जी ने इन सभी चयनित बच्चों से भेंट कर इनके साहस की प्रशंसा की। गणतंत्र दिवस की ऐतिहासिक परेड का हिस्सा बनने का अवसर भी इन सभी बच्चों को मिला।

सूर्य प्रसाद ने इससे प्रेरित होकर अब भविष्य में विश्व की सबसे ऊँची बर्फीली चोटी एवरेस्ट पर चढ़ने का मन बना लिया है। इसके लिए उन्हें किसी प्रायोजक की प्रतीक्षा है जो उनके सपनों की इस उड़ान को पंख दे सके।

नन्हे मित्रो!
मन में निश्चय करके लक्ष्य बना लोगे तुम।
अपनी सारी ऊर्जा उसमें डालोगे तुम।।
जो भी सोचोगे उसको कर डालोगे तुम।
लगे रहे तो अपनी मंज़िल पा लोगे तुम।।

*

बाल वैज्ञानिक : आर्यन सिंह

आर्यन सिंह को बचपन से ही विज्ञान और तकनीक के कार्यों में विशेष रुचि थी। वे अपने परिवार के साथ राजस्थान के कोटा शहर में रहते हैं। काफी छोटी आयु में वह अपने दादाजी के साथ अपने पैतृक गाँव उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में जाते तो अपने दादाजी को पौ फटे भोर में ही या देर शाम अपने खेतों पर बार–बार जाते हुए देखते। विपरीत मौसम होने पर भी जब सब लोग घर पर विश्राम कर रहे होते तो उनके दादाजी को खेत पर उसकी निराई, गुड़ाई, कटाई और रखवाली जैसे अनेक कामों के लिए जाना पड़ता।

वह मन ही मन सोचता कि बड़ा हो जाने दो। मैं दादाजी की इन सारी कठिनाइयों को दूर कर दूँगा।

परिस्थितियों के कारणवश आज से पचास वर्ष पहले आर्यन के परिवार को राजस्थान के कोटा नगर में जाना पड़ा। जहाँ इन दिनों उनके पिता जितेन्द्र सिंह जन–सुविधा केन्द्र के संचालक, उनकी माता गृहिणी और छोटी बहन राशि शाला में अध्ययनरत हैं। कक्षा नौ में पहुँचकर आर्यन ने जब विज्ञान विषय का चुनाव किया तो मानों उन्हें अपनी मन इच्छित रुचि का काम मिल गया।

हुआ यह कि उनके एसआरपीएस शाला में शिक्षक ओमप्रकाश सोनी ने सभी बच्चों को शाला की ओर से विज्ञान विषय से संबंधित प्रोजेक्ट दिए। जिसकी थीम सोशल वेलफेयर यानि कि सामाजिक कल्याण थी। सभी बच्चे अपनी–अपनी रुचि के अनुसार प्रोजेक्ट चुन रहे थे।

आर्यन ने सामाजिक कल्याण के अंतर्गत अपने दादाजी की परेशानियों को सामने रखकर ऐसी डिवाइस बनाने का काम अपने हाथ में लिया जिससे खेती के कई सारे काम सरलता से हो सकें।

वह वर्ष २०१९–२० के सत्र की बात है। जब आर्यन ने अपने इस प्रोजेक्ट पर काम करना प्रारंभ किया। उनकी बनाई डिवाइस अनेक बार अपग्रेड होती रही। प्रारंभ में आर्यन ने बीज रोपने और फसल काटने की डिवाइस बनाई फिर इसे अपग्रेड कर कम लागत की मल्टी फंक्शनल डिवाइस बनाई। जिसमें मिट्टी की नमी के अनुसार उसमें कितने पानी की आवश्यकता है, यह पढ़ा जा सकता था। चार वर्ष के अथक परिश्रम के बाद आर्यन ने अपनी बनाई डिवाइस चलाने के लिए सोलर एनर्जी का प्रयोग कर इसकी उपयोगिता को और अधिक बढ़ा दिया वहीं उसकी लागत को कम कर दिया। उसे ऐसा बनाया कि इंटरनेट एप बेबसाइट व फोन के माध्यम से इसे दुनिया में कहीं से भी चलाया जा सकता।

इससे आग लगने या सिस्टम से छेड़छाड़ करने, खेत में जानवर या संदिग्ध के आने पर, तेज आवाज में सायरन और वाट्सएप और टेलीग्राम के माध्यम से सूचना मिल जाती। कैमरे के माध्यम से पूरे खेत की निगरानी, पौधों की गिनती, खराब और कमजोर पौधे की पहचान हो जाती, दवा छिड़कने, खाद की उपयुक्त मात्रा की आवश्यकता को बता पाने और खेतों की ऊबड़–खाबड़ जमीन पर चलने में आर्यन सिंह का यह रोबोट समर्थ हो गया। आर्यन ने इसको एग्रोबोट का नाम दिया।

वस्तुतः २०२० में केन्द्र सरकार के नीति

आयोग के आदेशानुसार विद्यालयों में अटल टिंकरिंग लैब के लिए आर्यन के स्कूल को भी फंड मिला। बारह लाख में बनी इस लैब से बच्चों को अपनी सोच की उड़ान को पंख खोलने का अवसर मिला।

आर्यन को अपने इस मिनी रोबोट एग्रोबोट को इस स्थिति तक पहुँचाने में बाजार, स्कूल, प्रयोगकर्त्ता सभी से मिले उपयोगी सुझावों का सहयोग मिला। उनके अपने विद्यालय एसआरपीएस के अलावा जयपुर की विवेकानन्द ग्लोबल यूनिवर्सिटी, आई स्टार्ट इनक्यूबेशन सेंटर कोटा, डिपार्टमेंट ऑफ साइंस एंड टेक्नालॉजी से फंडिंग मिली।

कोरोनाकाल में भी लगे रहकर आर्यन कजाकिस्तान और रूस में होने वाली ऑनलाइन प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहे। वहाँ से वे अवार्ड और रिवार्ड जीतते रहे। इससे इनका आत्मविश्वास लगातार बढ़ता रहा।

अब तक आर्यन को अपनी इस उपयोगी खोज के लिए पन्द्रह से भी अधिक सम्मान मिल चुके हैं। गौरव की बात यह है कि इनमें चार सम्मान अंतर्राष्ट्रीय हैं। कनाडा से सिल्वर मैडल, मलेशिया से गोल्ड, रूस से एग्रीकल्चर में डिप्लोमा और नोबेल इनफारमेशन सेंटर रूस ने इनके इन उपकरण को नोबेल आईडिया माना और इस आशय का प्रमाण-पत्र भी प्रदान किया। चार फीट लम्बे रोबोट को बनाने में उनका आठ हजार रुपए का खर्च आया। आवश्यकता के अनुसार इसकी लंबाई घटाई और बढ़ाई जा सकती है। साथ ही इसमें अन्य उपयोगी उपकरण भी जोड़े जा सकते हैं।

आर्यन अपने विद्यालय में ही बीस-बाय-बीस के मैदान में अपने इस रोबोट की टेस्टिंग किया करते थे। इसमें लगा सोलर पैनल किसी भी दिशा में घूम सकता है। जिससे सूर्य से इसकी बैटरी चार्ज होने में आसानी हो सके और इसमें अभी ढाई दिन का बैटरी बैकअप है। इसमें आर्यन ने फीजियोइलेक्ट्रिक

माड्यूल को भी विकसित किया जिसके अन्तर्गत इस रोबोट को जितना भी भूमि पर चलाया जाएगा उससे उसकी मैकेनिकल ऊर्जा को इलेक्ट्रिकल ऊर्जा में बदल देगा। इस तरह इसमें चलने के लिए दो बैकअप सिस्टम होंगे।

आर्यन को उनके इस उपयोगी आविष्कार के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी श्रेणी में वर्ष २०२४ के प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से देश की राष्ट्रपति महोदया जी ने गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या को देश की राजधानी दिल्ली में सम्मानित किया।

आर्यन ने 'मेरा साथी' नाम से एक एप्लीकेशन भी बनाई है। जिसकी सहायता से घर बैठे-बैठे शाला, कॉलेज के छात्र-छात्रा कॉलेज के बारे में जानकारी ले सकते हैं। यह एप भी भारत सरकार को इतना पसंद आया कि उन्होंने इसे mygov.in में जोड़ दिया। यही नहीं आर्यन को सरकार ने mygov.in का ब्रांड एम्बेसडर भी बना दिया।

नन्हे मित्रो!

मन में जो भी सोचोगे कर डालोगे तुम।
बन जाओगे जैसा स्वयं को ढालोगे तुम।।
एक लक्ष्य ले लगन निरंतर चले अगर जो,
मनचाही मंज़िल जीवन में पा लोगे तुम।।

रचनात्मकता की प्रतिमा : हेतवी कांतिभाई खिमसुरिया

गुजरात राज्य के अमरेली के सावरकुंडला में वर्ष २०११ के जनवरी माह की वह उन्नीस तारीख थी। जब एक दलित परिवार में शाम सात बजे उस घर में लोग किसी बच्चे के जन्म की प्रतीक्षा कर रहे थे। सात बजकर ग्यारह मिनट हुए थे कि एक बच्चे के जन्म के साथ ही उसके रोने की आवाज सुनाई पड़ी। उत्सुकतावश लोगों ने पूछा– ''क्या हुआ?'' तो उत्तर सुनकर पूछने वालों ने मुँह बना लिया। बोले– ''लड़की हुई है।''

वह क्षेत्र ऐसा था जहाँ महिलाओं के जन्म को कम महत्व दिया जाता था। बेटी का जन्म तो अभिशाप माना जाता था। और बेटे के जन्म पर आनंद मनाया जाता। वह बेटी दिन–रात रोती रहती और जागती रहती। न स्वयं सोती और न किसी दूसरे को सोने देती।

देखने वालों ने देखा तो पता चला कि वह बच्ची मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं लग रही थी। अंदर खाने परिवार के बड़े लोगों में बात होने लगी कि किसी न किसी तरह सारी उम्र ढोने की अपेक्षा इस बच्ची से अभी छुटकारा पा लो यही अच्छा होगा। किन्तु माँ की ममता और पिता का स्नेह इसके लिए बिलकुल भी तैयार नहीं था।

जब घर परिवार के लोगों का दबाव अधिक बढ़ने लगा और यहाँ तक कहा जाने लगा कि यदि तुम ऐसा नहीं कर सकते तो यहाँ से इस घर को छोड़कर चले जाओ। विवाद इतना बढ़ा कि कांति भाई और उनकी पत्नी लीला को आधी रात को पड़ोस के घर में शरण लेनी पड़ी। उन्होंने सुबह होते ही बस पकड़ी और अहमदाबाद आ गए।

कांति भाई और उनकी पत्नी शिक्षक थीं। अकेली ऐसी बच्ची को वे भला किसके सहारे छोड़ते। ऐसे में किसी ऐसे सहायक की आवश्यकता थी जो

उनकी सहायता करता। संयोग से उन्हें अपने एक दूर के रिश्तेदार का सहयोग मिला तो उन्होंने अपनी पाँच महीने की बेटी को उपचार के लिए किसी एक अच्छे डॉक्टर को दिखाया। उन्होंने जाँच करके जो बताया उसे सुनकर माता–पिता दोनों के पैरों तले धरती खिसकती दिखी।

उन्होंने बताया कि आपकी बेटी को एक ऐसी बीमारी है जिसका कोई उपचार नहीं है। वस्तुत: हेतवी ७५ प्रतिशत सेरेब्रल पाल्सी नामक गंभीर रोग और इसके साथ मानसिक मंदता का शिकार थी। यह बीमारी दुर्लभ और असाध्य थी। डॉक्टर ने कहा कि उसे बचाने के लिए उन्हें उसकी नियमित देखभाल और लगातार चिकित्सा कराते रहना होगा।

अब यह परिवार छोटे से किराए के मकान में रहने लगा था और नियम से चिकित्सा कराने लगा। बेटी की देखभाल और आवश्यकता को देखते हुए माँ

को अपनी सरकारी नौकरी छोड़ देनी पड़ी। चूँकि एलोपैथी उपचार से कोई विशेष लाभ नहीं होता दिखाई दिया तो इन्होंने होम्योपैथी पद्धति से उपचार कराना प्रारम्भ कर दिया।

लगातार देखभाल और नियमित उपचार से अब बच्ची ने छीरे–धीरे बैठना सीख लिया था। यद्यपि उसकी शारीरिक आयु भले ही उस समय तक पाँच वर्ष की हो चुकी थी किन्तु मानसिक रूप से उसकी समझ अभी मात्र छः माह की बच्ची के जैसी ही थी।

कुछ समय के बाद कांति भाई, हेतवी के उपचार के लिए सुविधा और सामर्थ्य के अनुसार वडोदरा आ गए कि यहाँ हेतवी को उपचार की अच्छी सुविधाएँ मिल सकेंगी। अब उन दोनों का ध्यान अपनी सीमित सामर्थ्य और दैनिक जीवन की कठिनाइयों के होते भी न केवल हेतवी को अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान करवाने पर था बल्कि वे उसे हमेशा कुछ न कुछ नया सिखाते रहते।

चूँकि हेतवी का जन्म सेरेब्रल पाल्सी, मानसिक मंदता, अस्थमा, पीलिया, कमजोरी जैसी बीमारियों के साथ हुआ था, अपनी गंभीर और असाध्य बीमारी के कारण उसे दस से पन्द्रह दिन तक काँच के बक्से में भी रखा गया था। पाँच छः वर्ष में उसने चीजों को धीरे–धीरे सीखना शुरू किया। सात वर्ष तक बिस्तर पर ही पड़े–पड़े नियमित चिकित्सा और माता–पिता के लगातार देखभाल से हेतवी को चीजों की समझ आने लगी थी। किन्तु वह अभी भी बोलने और चलने में असमर्थ थी। व्हील चेयर पर लेकर उसे चलना पड़ता था।

हेतवी की माँ की चित्रकला बनाने में रुचि थी सो उन्होंने धीरे–धीरे हेतवी को पेटिंग का ब्रश पकड़ाने का प्रयत्न किया और रंग भरने का अभ्यास आते ही उन्होंने हेतवी को शैक्षिक पहेलियाँ व्यवस्थित करना सिखाया।

माता–पिता के लगातार प्रयासों ने रंग दिखाना शुरू कर दिया और अब हेतवी में आत्म विश्वास और सीखने की उत्सुकता बढ़ने लगी थी। उन्होंने हेतवी की बनाई इन लगभग दो सौ पचास मुक्त हस्त चित्रकला शिल्प कृतियाँ और सौ शैक्षिक पहेलियों को अपने यू ट्यूब चैनल 'स्पेशल चाइल्ड एजुकेशन एक्टिविटी हेतवी खिमसुरिया' पर अपलोड कर दिया।

जिसे गुजरात के तीस विद्यालयों के बच्चों ने देखा और वे न केवल हेतवी की कला से प्रभावित हुए बल्कि स्वयं कला की रचनात्मकता की ओर प्रेरित हुए।

कक्षा छः में आते ही हेतवी के इन कार्यों को उनके माता–पिता ने विभिन्न कला संस्थानों से जोड़ना विभिन्न बाल मेलों में प्रदर्शित करना आरंभ कर दिया। शाला, मेलों में लगी हेतवी की इन कला और शिल्प कृतियों को सात सौ से भी अधिक बच्चों और स्थानीय अधिकारियों ने देखा और उसकी प्रशंसा की। यह देखकर न केवल हेतवी बल्कि उनके माता–पिता का भी उत्साह और आगे बढ़ा।

अब उन्होंने अधिक उत्साह के साथ सामान्य और विशेष बच्चों के विद्यालयों में हेतवी की रचनात्मक कृतियों के साथ भाग लेना शुरू किया। कोरोना काल में वे ऐसे कार्यक्रमों से ऑनलाइन भी जुड़े। ऐसे ही एक ऑनलाइन कार्यक्रम में एक सौ ग्यारह सामान्य बच्चों ने भाग लिया था जिसमें हेतवी अकेली विशेष बच्ची थी।

इसमें बीस बच्चों की कलाकृतियाँ चुनी गईं। पहली बार हेतवी की बनाई एक कलाकृति 'ब्रह्मांड' को काँस्य पदक से सम्मानित किया गया। यह हेतवी की रचनात्मकता को पहली सामाजिक स्वीकृति थी।

इससे प्रोत्साहित होकर हेतवी की कला कृतियों को उनके माता–पिता ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनियों और प्रतियोगिताओं में भेजना प्रारम्भ कर दिया।

किन्तु जैसा कि होता है कि सदैव तो सफलता नहीं मिलती। इसलिए कभी सफलता और कभी असफलता से वे आगे बढ़ते रहे। आज हेतवी के चित्रों को देशभर की पचास से अधिक कला दीर्घाओं में प्रदर्शित किया जा चुका है।

हेतवी को अपने इन रचनात्मक कार्यों के लिए गुजरात के मुख्यमंत्री, महिला बाल कल्याण मंत्री, स्वास्थ्य मंत्री, शिक्षा मंत्री, गृहमंत्री, खेलमंत्री, राज्यपाल द्वारा अनेक अवसरों पर सम्मानित किया गया।

इस कारण प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर हेतवी को महत्त्वपूर्ण कवरेज मिला। पूरे गुजरात में हेतवी क्रियेटिव गर्ल के रूप में पहचानी जाने लगी। वडोदरा के नगर प्राथमिक शिक्षा समिति द्वारा संचालित स्वामी विवेकानन्द प्राइमरी स्कूल की ख्याति उसमें पढ़ने वाली हेतवी के कारण पूरे गुजरात में हो गई।

स्कूल संचालन समिति ने हेतवी को ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह रुपए का चेक देकर सम्मानित किया। गुजरात बुक ऑफ रिकार्ड, इंडिया बुक रिकार्ड, लंदन बुक रिकार्ड सहित चार बुक रिकार्डों में हेतवी का नाम दर्ज हुआ।

वर्ष २०२३ में ग्यारह वर्ष का सबसे प्रेरक कलाकार, प्राइड ऑफ इंडिया अवार्ड, भारत नारी रत्न सम्मान, मदर टेरेसा मेमोरियल अवार्ड, एक्स्ट्रा आर्डीनरी अवार्ड, टॉप एक्रेलिक अवार्ड, जुनियर आर्टिस्ट अवार्ड, आदर्श विद्या सरस्वती राष्ट्रीय पुरस्कार जैसे अनेक पुरस्कार मिले।

वर्ष २०२४ में मिले अन्य अनेक पुरस्कारों के साथ हेतवी को देश की राष्ट्रपति महोदया द्वारा प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार देने की घोषणा हुई। देश की राजधानी दिल्ली में उसे देशभर के चुने हुए उन्नीस बच्चों के साथ यह पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी उनसे भेंट की। गणतंत्र दिवस की ऐतिहासिक परेड में भी उनकी सवारी निकाली गई।

हेतवी ने कला के माध्यम से अपनी विकलांगता को योग्यता में बदल दिया। अब तक एक सौ पाँच राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रमाण-पत्र, पच्चीस स्वर्ण, चार रजत तथा एक कांस्य पदक के साथ इकतीस ट्रॉफियाँ प्राप्तकर हेतवी विकलांग और सामान्य बच्चों के लिए प्रेरणा की प्रतीक बन चुकी है।

नि:संदेह इसमें उनके माता-पिता की लगन और समर्पण तो है ही किन्तु हेतवी की लाइलाज बीमारी में तमाम कठिन परिस्थितियों के बावजूद उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति, आत्मविश्वास और सीखने की अदम्य लगन को अनदेखा नहीं किया जा सकता है।

नन्हे मित्रो!

कैसे भी हालात हों, मगर कभी नहीं घबराना।
डूबो अगर, कड़ी मेहनत से उठकर बाहर आना।
हार नहीं मानते कभी जो वे ही जग में जीते,
कालकूट को घोट-पीसकर वे अमृत रस पीते।।

✲

पखावज वादक : अरिजीत बनर्जी

पश्चिम बंगाल का दार्जिलिंग शहर देश के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। देश–विदेश के पर्यटक यहाँ आते हैं। यहाँ की 'टाइगर हिल' पहाड़ी से हिमालय की बर्फीली चोटियों का मनोरम दृश्य देखने को मिलता है। यूनेस्को की विश्व धरोहर में सम्मिलित हिमालयन रेलवे की खिलौना ट्रेन सत्तर किलोमीटर पहाड़ियों की चक्करदार यात्रा तय करती हुई सिलीगुड़ी पहुँचती है। यह यात्रा बहुत आनंददायक और रोमांच से भरपूर है। सिलीगुड़ी भी दार्जिलिंग जिले का भाग है।

इसी सिलीगुड़ी में प्रेमेन्द्र मित्रा स्ट्रीट की डापग्राम कॉलोनी के रहने वाले संजोय कुमार बनर्जी और केया बनर्जी के पुत्र का नाम अरिजीत बनर्जी है। अरिजीत का जन्म वर्ष २०१० में जुलाई की नौ दिनांक को हुआ। उनका परिवार संगीतकारों का परिवार है क्योंकि उनके पिता पखावज सम्राट कहे जाने वाले कुदाऊ सिंह घराने के शिष्य हैं और उनकी माँ केया बनर्जी सरकारी विद्यालय में संगीत की शिक्षिका हैं।

वे बचपन से ही डागर घराने की ध्रुपद और खयाल गायिका हैं। इसीलिए जन्म के पहले से ही अभिमन्यु की तरह अरिजीत के तन–मन में संगीत रचने बसने लगा। जैसे ही उन्हें अपने हाथों की अँगुलियों को चलाने की सामान्य योग्यता मिली तो उनकी वे अँगुलियाँ पखावज पर थिरकने लगीं। चार वर्ष की अवस्था में ही वे घर पर पिता संजय कुमार बनर्जी के निर्देशन में पखावज को बजाने का अभ्यास करने लगे।

योग्य घराने के योग्य गुरु के निर्देशन में शीघ्र ही अरिजीत बड़ी निपुणता से अपनी नन्हीं अँगुलियों से मधुर पखावज बजाने लगे।

उन्होंने मात्र पाँच वर्ष की आयु में ही अपनी कला का पहला सार्वजनिक प्रदर्शन किया। यह कार्यक्रम असम राज्य के शिलचर में हुआ था। जिसे संगीत चक्र संस्था द्वारा आयोजित किया गया था। वहाँ नन्हें अरिजीत के मधुर पखावज वादन को देख और सुनकर लोग दंग रह गए। यही नहीं अरिजीत ने उसी दौरान आकाशवाणी सिलीगुड़ी में शिशु कलाकार के तौर पर अपनी पखावज वादन की इस प्रतिभा का प्रदर्शन किया। अपनी कम आयु में अर्जित की गई इसी प्रतिभा के चलते उन्हें वर्ष २०१९ में पंडित श्यामल बोस की स्मृति में प्रारंभ की गई छात्रवृत्ति प्रदान की गई।

अब जहाँ भी संगीत वादन संबंधी आयोजन होते अरिजीत को अपनी कला प्रदर्शन का अवसर सहज ही मिल जाता। इसी बीच सुतानुति परिषद कोलकाता ने तबला पखावज युवा प्रतिभा प्रतियोगिता का आयोजन किया। जिसके सात से अट्ठारह वर्ष वाले कलाकार वर्ग में भाग लेकर अरिजीत ने अपने प्रभावी प्रदर्शन के कारण प्रथम स्थान अर्जित किया। इसी के साथ वर्ष २०२० की प्रतिभा खोज प्रतियोगिता में भी उन्होंने कोलकाता में प्रथम स्थान प्राप्त कर लिया।

अनेक प्रतिष्ठित मंचों पर प्रदर्शन के बाद काशी के राजा के हाथों उन्हें वर्ष २०२० के अंतर्राष्ट्रीय ध्रुपद मेले में एकल पखावज वादन कला के प्रदर्शन के लिए

'स्वाति तिरुनल पुरस्कार' दिया गया।

छन्द यान न्यूयॉर्क संगीत संस्था की कोलकाता शाखा डीएसी के द्वारा २०२१ में अरिजीत को अंतर्राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्रदान की गई। इसी प्रकार वे कनाडा की संगीत संस्था 'करन इंस्टीट्यूट ऑफ म्यूजिक' द्वारा आयोजित एक ऑनलाइन संगीत वादन प्रतियोगिता में भी प्रथम स्थान पर रहे। जबकि कला रसिक फाउण्डेशन कोलकाता द्वारा २०२१ में उन्हें प्रथम स्थान और सभी वाद्य यंत्रों में भी श्रेष्ठतम वादक की श्रेणी मिली।

ध्वनि अकादमी कोलकाता द्वारा आयोजित परकशन पंडित ज्ञानप्रकाश घोष मेमोरियल प्रतियोगिता २०२२ और संगीत पियासी कोलकाता द्वारा आयोजित परकशन २०२२ में भी अरिजीत को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। इसी वर्ष उनका नाम अपनी बारह वर्ष के आयु वर्ग में एक ही रिदम में आधा घंटे तक लगातार पखावज वादन के लिए एशिया बुक ऑफ रिकार्ड में सम्मिलित किया गया।

अरिजीत को वर्ष २०२२-२०२४ की अवधि में प्रतिष्ठित 'भारत रत्न सुब्बुलक्ष्मी फेलोशिप पुरस्कार' प्रदान किया। वहीं वर्ष २०२३ में सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र नई दिल्ली के द्वारा उन्हें छात्रवृत्ति प्रदान की गई। अरिजीत ने भारत मंडपम् नई दिल्ली में नौ सितम्बर को जी-२० शिखर सम्मेलन में विदेशी राष्ट्राध्यक्षों के समक्ष दिए गए संगीत कार्यक्रम में भागीदारी निभाई। जिसमें अरिजीत के पखावज के साथ चौतीस हिन्दुस्थानी वाद्य यंत्र, अट्ठारह कर्नाटक वाद्य यंत्र और चालीस लोक वाद्य यंत्र सम्मिलित थे।

अरिजीत की इन सारी उपलब्धियों ने उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर दिए जाने वाले प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार का पात्र बना दिया।

देश की राष्ट्रपति महोदया ने प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार २०२४ प्रदान किया बल्कि देश के प्रधानमंत्री जी ने उनको बुलाकर उनकी कला प्रतिभा की प्रशंसा की।

यही नहीं अरिजीत के संगीत समर्पण और उनकी असाधारण प्रतिभा को देखते हुए उन्हें सात फरवरी २०२४ को महाराष्ट्र राज्य के पुणे में प्रसिद्ध फिल्म संगीत निर्देशक अनु मलिक के हाथों से 'सूर्यदत्त यंग अचीवर लिटिल मास्टर अवार्ड' दिया गया।

इन दिनों वे मृदंगाचार्य गुरुदास घोष से पखावज वादन सीख रहे हैं। अरिजीत ने बचपन से ही पखावज वादन के साथ-साथ अपनी माँ के प्रभाव से ध्रुपद गायन भी सीख लिया है। वे अपने ध्रुपद गायन में स्वयं से संगत भी कर सकते हैं। परन्तु उनका मुख्य ध्यान पखावज वादन पर ही केंद्रित है।

नन्हे मित्रो!

लगन लगाकर लगे रहे तो पहुँच ही जाओगे।
सोच में भी सोचा ना जो हो, वो पद पाओगे।
अगर डिगे तुम नहीं कभी, जो अपनी मंज़िल से,
'बनेंगे तुम-सा' कहें सभी, पहचान बनाओगे।।

*

बैडमिंटन तारिका : आदित्या यादव

उत्तर प्रदेश राज्य के गोरखपुर जिले में जंगल तुलसीराम बिछिया के वार्ड नम्बर सत्रह की मैत्रीपुरम कॉलोनी में दिग्विजय नाथ यादव रहते हैं। वे एनईआर रेलवे के मुख्यालय में मुख्य कार्यालय अधीक्षक और रेलवे बैडमिंटन टीम के कोच के रूप में कार्यरत हैं। वह वर्ष २०१० का बाईस नवम्बर था। जब उनके घर उनकी दूसरी संतान जन्म लेने वाली थी। जब उनके घर बेटी आदित्या ने जन्म लिया तो उन्हें लगा कि अब हमारा परिवार पूरा हो गया क्योंकि उनकी बड़ी संतान के रूप में उनका बेटा अविरल पहले से ही उनके पास था।

उन्होंने ईश्वर को बहुत धन्यवाद दिया कि उसने उनकी सारी इच्छाएँ पूरी कर दीं थीं। वे अपने उत्तरदायित्व के निर्वहन में लग गए। किन्तु होनी को तो कुछ और ही स्वीकार था। जब आदित्या लगभग ढाई वर्ष की रही होगी तभी एक दिन घर के लोगों को अनुभव हुआ कि आदित्या बुलाने पर कोई प्रतिक्रिया नहीं देती है। जब कोई वस्तु गिरती है तो उसे देखकर ही अपनी प्रतिक्रिया देती है किन्तु सुनकर नहीं।

चिंतित दिग्विजयनाथ आदित्या को देश की राजधानी के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान यानि एम्स में लेकर पहुँचे।

पता चला कि आदित्या को ऑपरेशन करके काक लेयर इंप्लांट किया जाएगा। जिसके लिए उन्हें चार पाँच वर्ष दिल्ली में रहना होगा। वहाँ उन्हें पता चला कि इंप्लांट के बाद यदि कोई शारीरिक दुर्घटना हो जाती है तो आदित्या मानसिक रूप से बीमार भी हो सकती है। अधिक लम्बे समय तक रुक पाना उनके लिए व्यावहारिक रूप से संभव नहीं था। परिस्थितियों से हताश होकर वे वापस गोरखपुर लौट आए। वे सुबह स्टेडियम में जब बैडमिंटन की कोचिंग देने जाते तो उनके साथ उनका बेटा अविरल भी जाता था। ऐसे में कभी पीछे-पीछे हठ करके अविरल के साथ आदित्या भी स्टेडियम जाने लगी।

जब वह पाँच वर्ष की थी तब एक दिन खाली समय में मैदान पर कोई नहीं था उस समय आदित्या अपने हाथ में बैडमिंटन का रैकेट लेकर खड़ी हो गई मानो कह रही हो कि ये खेल तो हम भी खेलेंगे। जैसा कि होता है बच्चों के मनबहलाव के लिए कुछ देर के लिए दिग्विजय नाथ ने उसे रैकेट पकड़ा दिया और अविरल ने शटल को मारना प्रारंभ कर दिया।

कुछ ही दिनों में दिग्विजय यादव ने देखा कि आयु छोटी होते हुए भी आदित्या का रैकेट पकड़ने का अंदाज और खेलने का तरीका किसी व्यावसायिक खिलाड़ी की तरह था। उन्हें लगा कि यदि आदित्या को अच्छे ढंग से प्रशिक्षण दिया जाए तो वह इस खेल की अच्छी खिलाड़ी बन सकती है।

अब वे नियमित रूप से आदित्या को स्टेडियम लाने लगे। वे क्या लाने लगे आदित्या उनसे पहले स्टेडियम जाने के लिए तैयार खड़ी मिलती। लगातार अभ्यास से आदित्या का खेल दिनोंदिन निखरने लगा। बाहरी कोलाहल ध्यान बंटाने वाले अवरोधों के न होने से उसे अपने लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करने में अन्य बच्चों की तुलना में अधिक सरलता हुई।

एक दिन तो सब दंग रह गए जब सबके देखते-देखते आदित्या ने अपनी आयु के एक अच्छे खिलाड़ी लड़के के साथ खेलते हुए उसके सारे प्रयत्नों के बाद भी उसे लम्बे अंतर से पराजित कर दिया।

देश-विदेश की अनेक स्तरीय प्रतियोगिताओं में वह अपनी खेल प्रतिभा सिद्ध करती जा रही थी।

उसका चयन जब राष्ट्रीय मूक बधिर प्रतियोगिता के लिए किया गया तब उसकी आयु मात्र आठ वर्ष की थी। वर्ष २०१८ में चेन्नई में आयोजित राष्ट्रीय प्रतियोगिता में वह पहली बार में ही वरिष्ठ वर्ग के एकल और युगल में विजेता बनी। अगले वर्ष जब कोजीकोट केरल में उसने यही प्रदर्शन दुहराया तो उसका चयन अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए कर लिया गया।

मात्र दस वर्ष की आयु में आदित्या ने चीन के ताईपे में आयोजित बैडमिंटन की विश्व चैम्पियनशिप प्रतियोगिता में भाग लिया। फिर वर्ष २०२२ में ब्राजील में होने वाले तीसरे विश्व युगा डेफ बैडमिंटन चैम्पियनशिप और छठी विश्व बधिर चैम्पियनशिप के वरिष्ठ टीम स्पर्धा और वरिष्ठ युगल स्पर्धा में स्वर्ण पदक, वरिष्ठ एकल में रजत कनिष्ठ एकल और युगल में रजत पदक प्राप्त किये।

इतिहास में दोनों प्रतियोगिताओं में पहली बार हुआ था कि भारतीय टीम ने इतने पदक जीते हों। स्वर्ण पदक जीतने वाली टीम की सबसे छोटी सदस्य थी। ब्राजील में ही एक से पंद्रह मई २०२२ को होने वाली डेफलिंपिक्स की टीम स्पर्धा में आदित्या ने स्वर्ण पदक पर कब्जा जमाया और इसी वर्ष १४-२० सितम्बर के बीच थाईलैंड में आयोजित दूसरी एशिया पैसफिक युवा बैडमिंटन चैम्पियनशिप के अंडर-२१ बालिका वर्ग की युगल प्रतिस्पर्धा में स्वर्ण पदक और एकल में रजत पदक के साथ मिश्रित युगल स्पर्धा में काँस्य पदक प्राप्त कर आदित्या ने देश का सिर गर्व से ऊँचा कर दिया।

इसके साथ ही छठी एशिया पैसफिक बैडमिंटन चैम्पियनशिप वरिष्ठ वर्ग की बालिका प्रतियोगिता में युगल के ओपन मैच में स्वर्ण और बालिका एकल ओपन में आदित्या ने कांस्य पदक प्राप्त कर लिया। आदित्या के इस अच्छे खेल उपलब्धियों को देखते हुए उन्हें वर्ष २०२४ के प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार के लिए चुन लिया गया। आज आदित्या सामान्य श्रेणी के अंडर-१९ वर्ग में मिश्रित और युगल में उत्तर प्रदेश राज्य की पहले नंबर की खिलाड़ी हैं। इसके अतिरिक्त वरिष्ठ वर्ग की डबल्स में भी वे सामान्य श्रेणी में वे नंबर एक की खिलाड़ी हैं।

उनका विजय अभियान निरंतर चालू है। उन्हें तेहरान में १६-२६ अक्टूबर २०२४ के बीच होने वाले एशिया पैसिफिक डेफ खेलों में भाग लेने के लिए भारत की ओर से चुना गया है। पी. वी. सिन्धु से मिल चुकी आदित्या उन्हें अपना आदर्श मानती है और उनकी इच्छा है कि सामान्य एकल वर्ग में देश के लिए ओलम्पिक पदक जीतूँ। सभी देशवासियों की शुभकामनाएँ उनके साथ हैं।

नन्हे मित्रो!

लगे लगन में रहे अगर तो मंज़िल पाओगे ही।
कितना भी हो कठिन लक्ष्य तुम उस पर जाओगे ही।
बाधाएं दिखतीं हैं उनको, जिनकी दृष्टि भटकती।
किया अनूठा काम, प्यार सबका तुम पाओगे ही।।

✲

बाल बलिदानी : आदित्य विजय ब्रह्मणे

विजय ब्रह्मणे भारत के महाराष्ट्र राज्य में एक शिक्षक हैं। वे एक अच्छे सीधे-सादे और सरल उदार और बच्चों में लोकप्रिय। उनकी समाज सेवा में बहुत रुचि है। अनमोल विरासत को संरक्षित करना, रक्तदान शिविर आयोजित करना और महिलाओं, बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा, खेल की तैयारी में सहयोग करना। समाज सेवा में उनकी रुचि के विषय रहे।

उनका बेटा आदित्य भी अपने पिता के पदचिह्नों पर चलने लगा। धीरे-धीरे उसकी ऐसा स्वभाव बन गया जिन पर उसके पिता के व्यक्तित्व की छाप थी।

मई २०२३ में जब उसके विद्यालय में छुट्टियाँ हो गईं। तब आदित्य की आयु बारह वर्ष की थी। उसने अपने चाचा के घर नंदूरबार जाने का तय किया। उधर उसके मामा-मामी भी पुणे से अपने परिवार के साथ वहाँ छुट्टियाँ मनाने के लिए आने वाले थे। जब यह बात आदित्य को पता चली तब से उसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। कारण उनके माना के बेटे हर्ष और श्लोक उसके समवयस्क थे उनसे उसकी खूब पटती थी।

उन दिनों नंदूरबार के निकट दरा गाँव में एक बाँध का निर्माण किया गया था। ऐसे में बाँध से गाँव के जल प्रबंधन के लिए वहाँ से एक नहर का निर्माण करना था। इसी कारण से उस नहर को मिट्टी खुदाई वाली मशीन जेसीबी से गहरा किया गया था। उसमें पानी भरा था जिससे पानी की गहराई पन्द्रह फिट तक हो गई थी।

यह १९ मई वाले दिन की बात थी छोटे-छोटे बच्चों का एक झुण्ड उनसे पहले पानी में तैरते हुए उछलकूद कर रहा था। उनको आनंद मनाते देख ये तीनों भी डरते-डरते पानी में धीरे-धीरे उतर गए क्योंकि तीनों को तैरना नहीं आता था।

स्वर्गीय आदित्य विजय ब्रह्मणे

वे उस समय पानी में किनारे-किनारे ही नहा रहे थे जबकि उधर गाँव के बच्चे पानी के अन्दर उछल-कूद कर रहे थे। जिन्हें उधर पानी में आनन्द लेते देख हर्ष और श्लोक और आदित्य भी उधर आगे बढ़ने के लोभ से न बच सके।

श्लोक और हर्ष उस समय पास-पास ही थे। जबकि आदित्य अभी भी किनारे पर ही था। वे दोनों धीरे से पानी में आगे की ओर बढ़ गए। किन्तु वे दोनों को वहाँ पर पानी की उस गहराई का पता न था जो उनके लिए खतरनाक थी। बहते हुए पानी में उनके पैर उखड़ गए और वे डूबने लगे।

उन दोनों को इस तरह डूबता देखकर आदित्य उन्हें बचाने के लिए पानी में आगे उन दोनों की ओर बढ़ गया हालाँकि उसे अच्छी तरह से तैरना नहीं आता था। पास जाकर आदित्य ने श्लोक को किनारे की ओर धक्का दे दिया। जिससे वह किनारे की ओर सुरक्षित पहुँच गया।

जब आदित्य के प्रयासों से श्लोक बाहर

निकल गया यह देखकर आदित्य का साहस बढ़ गया और वह दोगुने उत्साह से हर्ष को बचाने के लिए आगे बढ़ा। उसने आगे पहुँचकर हर्ष को भी श्लोक की तरह बाहर की ओर धक्का मार दिया जिससे हर्ष तो उस समय संकट से बाहर हो गया क्योंकि उसके पाँव धरती पर टिक गए। जबकि आदित्य झटका खाकर पानी के अन्दर की ओर चला गया। जहाँ अपेक्षाकृत अधिक गहराई थी।

परिणाम वही हुआ कि बचने के प्रयास में चलाए गए आदित्य के हाथ-पैर अनियंत्रित होकर उसे बजाय बाहर लाने के और गहरे पानी की ओर ले गए। आदित्य ने सहायता के लिए चिल्लाने का प्रयत्न किया तो ऐसे में उसके मुँह में पानी चला गया और वह उस ढलान पर पीछे की ओर फिसलता चला गया।

इनको डूबता देखकर छोटे-छोटे बच्चों का झुण्ड तो डर के मारे गाँव की ओर भाग गया। जबकि किनारे की ओर गए श्लोक व हर्ष सहायता के लिए चिल्लाने लगे।

इस अचानक हुई भागदौड़ चीख-पुकार को सुनकर पास में खेत में काम कर रहे गाँव के लोग उस

ओर दौड़ पड़े। उनमें सबसे आगे आने वाला सुरेश था। जिसे तैरना आता था। इसी के साथ पीछे से आने वाले हर्ष और श्लोक के पिता जितेन्द्र गंगाराम शिंदे ने भी आगे बढ़कर उसकी सहायता की जिससे आदित्य को पानी से बाहर निकालकर लाया गया।

लेकिन इस सारी दौड़-भाग का परिणाम शून्य इसलिए रहा क्योंकि इसी बीच आदित्य के मुँह में पानी भर जाने के कारण उसकी साँसों ने साथ नहीं दिया। काफी प्रयास किए गए लेकिन आदित्य को किसी भी प्रकार बचाया नहीं जा सका।

किन्तु इतने सारे प्रत्यक्षदर्शियों ने देखा था कि आदित्य ने किस बहादुरी से श्लोक और हर्ष के प्राणों की रक्षा अपने प्राणों की चिंता न करते हुए की थी।

किन्तु फिर भी अपनी सर्वोत्कृष्ट वीरता का प्रदर्शन करके आदित्य ने अपने प्राणों का बलिदान कर दिया और त्याग और परोपकार का एक अनूठा उदाहरण संसार के सामने प्रस्तुत कर दिया।

गाँव के लोगों ने आदित्य की इस वीरता की भावना का सम्मान करते हुए इस सर्वोच्च बलिदान की सच्ची कथा को सारे देश के बच्चों तक पहुँचाने के लिए 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' २०२४ के लिए भेज दिया।

वर्ष २०२४ के 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' से चुने जाने वाले उन्नीस बच्चों में एक नाम आदित्य विजय ब्रह्मणे का भी रहा।

उनका यह पुरस्कार लेने के लिए उनके पिता विजय ब्रह्मणे और छोटा भाई आरुष देश की राजधानी दिल्ली गए।

नन्हे मित्रो!

रस है जीवन इसका पीना, किसको कहते हैं?
जिसने जाना उसने माना, किसको कहते हैं,
छोटा हो पर भरा-भरा हो अपना ये जीवन
सीख लिया था उसने जीना, इसको कहते हैं।

✲

शिक्षा – ज्योति जलाती : गरिमा

देश के हरियाणा राज्य में महेन्द्रगढ़ की रहने वाली मात्र दस वर्ष की नन्हीं गरिमा का जन्म हरियाणा राज्य के महेन्द्रगढ़ जिले के नावदी गाँव में हुआ। जब वे मात्र तीन महीने की थीं उस समय उनके माता–पिता को पता चला कि गरिमा अपनी आँखों से देख नहीं सकती, घबराए उनके माता–पिता ने उनकी आँखों की जाँच कराई।

तब वे मात्र दो वर्ष की थीं जब देश के सबसे अच्छे माने जाने वाले अस्पताल दिल्ली के आल इंडिया मेडिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट यानि 'एम्स' में लगभग दो वर्ष तक उनकी आँखों की विभिन्न जाँचें होती रहीं।

उससे पता चला कि उनके दिमाग की वे नसें जो आँखों तक आतीं हैं उनमें कमजोरी है। उनमें कुछ ऐसी खराबी है जिसके कारण आँखों के ठीक होते भी वे उनसे कुछ देख नहीं सकती। साथ ही यह भी पता चला कि मेडिकल साईंस के पास आज की तिथि में इसका कोई उपचार भी नहीं है।

अब अपने हाथ में कुछ न पाकर इसे विधि का विधान मानकर उनके शिक्षक पिता नरेन्द्र ने इस स्थिति को स्वीकार कर लिया।

गरिमा की आयु तब मात्र तीन वर्ष की थी जब वे हरियाणा के अपने नावदी गाँव में एक छोटी साइकिल के साथ खेल रही थी। तभी उनके दरवाजे पर कोई महिला भीख माँगने आई उसके साथ एक लड़की भी थी जो गरिमा की आयु जितनी ही बड़ी थी। अवसर की बात यह थी कि वह लड़की उस समय बहुत जोर से रो रही थी।

उसे रोता हुआ देखकर गरिमा ने अपनी माँ से प्रश्न किया। ''क्या यह लड़की भीख माँगने की बजाय मेरी तरह पढ़ नहीं सकती? जब मैं शाला जाती हूँ तो यह शाला क्यों नहीं जाती है?''

गरिमा की माँ ने बताया कि– ''ये लोग गरीब हैं। इनके पास पैसे नहीं हैं शाला की शुल्क, पुस्तकें, कॉपी ये कहाँ से लाएँगे?''

गरिमा ने बताया कि उस समय मैंने स्वयं से पूछा कि– ''क्या मैं ऐसे बच्चों को पढ़ने में सहायता नहीं कर सकती?''

उसके मन ने उसे उत्तर दिया ''क्यों नहीं! अवश्य कर सकती हो। भले ही तुम्हारे जीवन में अँधेरा हो किन्तु तुम चाहो तो अपने जैसे दूसरे बच्चों के जीवन में ज्ञान का प्रकाश अवश्य ला सकती हो।''

उसने अपने मन की यह बात जब अपने पिता और माता को बताई तो वे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने गरिमा को इसके लिए प्रेरित किया और एक दिन 'साक्षर पाठशाला' के नाम से बैनर बनवाकर अपने गाँव के पास ईंट भट्टों के मजदूरों के बच्चों के बीच गरिमा को लेकर गए।

गरिमा ने उनके बीच जाकर उन्हें पहले टॉफी

गुब्बारे दिए और इस तरह उनसे मित्रता करके उन्हें गिनती, पहाड़ा और चित्रकारी का अभ्यास कराना प्रारम्भ कर दिया। उस दिन वहाँ से घर वापस लौटते समय गरिमा के मन में अत्यंत संतुष्टि के भाव थे।

इस तरह अब उन्होंने अपने घर के बड़े लोगों विशेषकर अपनी माँ के साथ धीरे-धीरे ईंट भट्टा मजदूरों के बच्चों के साथ-साथ अन्य झुग्गी बस्तियों में भी जाना प्रारंभ किया। एक दिन, दो दिन, कर करके गरिमा ने गाँव के सरपंच अन्य उच्च अधिकारियों की उपस्थिति में ऐसे कार्यक्रम करना निरंतर रखा। इस प्रकार इन्होंने सौ से भी अधिक ऐसे साक्षरता के कार्यक्रम करने के साथ-साथ लगभग एक हजार से भी अधिक बच्चों को पढ़ने-लिखने के लिए प्रेरित किया और उन्हें शाला जाने के लिए साहस बढ़ाया।

देखने सुनने वाले सभी लोगों ने गरिमा की इस लगन और समर्पण को देखा और इसकी बहुत प्रशंसा की। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी इस पहल ने लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचा। समाज की इस प्रेरक सेवा के लिए हरियाणा के जिला प्रशासन ने उन्हें महेन्द्रगढ़ में 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' कार्यक्रम के अन्तर्गत स्थानीय योजना 'म्हारी लाड़ो म्हारी शान' योजना का ब्रांड अम्बेसडर बना दिया।

गरिमा का उत्साह बढ़ गया और वे और भी अधिक परिश्रम से अपने इस अनूठे अभियान में जुट गईं। उनकी लगन रंग लाई और उनकी प्रसिद्धि जिले और राज्य की सीमाओं से बाहर जाने लगी। प्रसिद्धि अच्छे कार्यों की सुगंध ही तो होती है। उस दिन उनके गाँव के लोगों को बहुत प्रसन्नता हुई जब उन्हें सूचना मिली कि उनकी इस लगन और समर्पण को मान्यता प्रदान करते हुए देश के महिला और बाल विकास मंत्रालय ने गरिमा को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार प्रदान करने की घोषणा की।

विश्व पुस्तक मेला नई दिल्ली २०२४ में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा बनाए गए बाल मंडप में बच्चों के लिए अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया था। उसी में मेरे सहयोग से १५ फरवरी के दिन वहाँ आए बहुत सारे बच्चों से गरिमा ने भेंट की और उन्हें अपनी अब तक के जीवन की इस प्रेरक और रोचक यात्रा के बारे में बताया। जिसे देख सुनकर बच्चे चकित रह गए।

उन्होंने गरिमा की समाज के लिए की जा रहे इस परिश्रम की हृदय खोलकर प्रशंसा की और कहा कि वे भी इस भावना से प्रेरणा लेकर सामर्थ्य भर कुछ न कुछ अच्छा करने का प्रयास करेंगे।

गरिमा अभी राजधानी दिल्ली में पाँचवीं कक्षा की छात्रा हैं। वे अपनी पढ़ाई नेशनल एसोसिएशन फॉर ब्लाइन्ड रामकृष्णपुरम् से सीखी ब्रेल के माध्यम से लेपटॉप पर बहुत ही सरलता से करती हैं।

गरिमा ने बताया कि वे भविष्य में शिक्षिका बनकर देश और समाज में इसी तरह ज्ञान का प्रकाश फैलाना चाहती हैं।

नन्हे मित्रो!
नयनों में ज्योति नहीं तो क्या?
बाकी अंग सुचेतन हैं।
जो मिला मुझे वह कम तो नहीं
सब देख सके ऐसा मन है।।

प्रकृति के सपूत संयम मजूमदार

यह प्रकृति हमारे सबके लिए है। हम सबका जीवन एक दूसरे पर निर्भर है। ऐसे में किसी जीव को कष्ट देने से अंततः हम सभी जीव कहीं न कहीं प्रभावित होते हैं। इस सच्चाई को पूर्वोत्तर के राज्य असम की राजधानी गुवाहाटी के प्रसिद्ध कामरूप कामाख्या मंदिर के पास पांडु क्षेत्र में रहने वाले एक दस वर्षीय बालक संयम मजूमदार ने अपने जीवन में अपना लिया। तब वे मात्र चौथी कक्षा के छात्र थे। उनके मन में पशु–पक्षियों के प्रति प्रेम स्नेह का बीज अंकुरित हो गया।

उसके मोहल्ले में किसी ने क्रूरता से एक कुतिया के पिछवाड़े को घासलेट लगाकर सहने के लिए छोड़ दिया। ऐसे में ही उसने जैसे–तैसे चार पिल्लों को जन्म दिया और उसके बाद उसकी पीड़ा ऐसी बढ़ी कि वह हर किसी पर भौंकने लगी तो लोगों ने उसे मार दिया। उसके उन चार पिल्लों की संयम ने देखभाल की। कुछ दिन उन्हें रखकर दो पिल्लों को लोगों को पालने के लिए दे दिया जबकि दो अभी भी संयम के पास हैं।

इस प्रकार वर्ष २०१७ में संयम ने आश्रय और भोजन से वंचित और संक्रामक बीमारी कैनाइन पार्वो वायरस से पीड़ित एक हजार से भी अधिक निराश्रित आवारा फिरने वाले कुत्तों को बचाया। यही नहीं इसके अतिरिक्त शहर के विभिन्न क्षेत्रों से आठ सौ से अधिक साँपों को भी बचाकर उन्हें सुरक्षित स्थान पर छोड़ा।

वे कहीं भी बीमार घायल आवारा जानवर जैसे गाय, कुत्ते, बिल्ली, खरगोश और साँप आदि को देखते तो उसकी सहायता करने में लग जाते। जैसा कि सामान्यत: होता है कि जब भी आप कोई लीक से हटकर काम करने का प्रयत्न करते हैं तो पहले तो लोग आपकी हँसी उड़ाते हैं। किन्तु फिर भी आप उनकी हँसी की चिंता न करते हुए अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहते हैं तो धीरे–धीरे वे आपके प्रशंसक हो जाते हैं।

एक नौ–दस वर्ष के बालक का ऐसे भलाई के काम के प्रति लगन को देखते हुए कुछ लोग उससे जुड़

गए और प्रशंसा के साथ–साथ कभी–कभार उसकी सहायता भी करने लगे। कोरोना काल में लगभग चालीस लोगों की टीम संयम के साथ जुड़ गई थी।

संयम और दो–गुने उत्साह के साथ इस काम में लग गए। अब तो यह हो गया कि कोई भी कहीं किसी घायल, बीमार पशु–पक्षी को देखता तो संयम को उसकी सूचना देता। दया ममता के गुण तो सभी बच्चों के मन में होते हैं। प्रारंभिक एक वर्ष तक संयम ने बिलकुल अकेले इस कार्य को किया, फिर संयम को ऐसा काम करते देखकर उसके जैसे स्वभाव वाले बच्चे उसके मित्र भी बन गए। वे मिलकर आवारा पशुओं, कुत्तों आदि के भोजन और आश्रय की व्यवस्था स्थानीय लोगों की सहायता से करने लगे।

अपने बच्चे को ऐसा भलाई का काम करते देख उसके माता–पिता प्रसन्न होते और आवश्यकता पड़ने पर उसकी आर्थिक सहायता भी करते। संयम के द्वारा बीमार घायल कुत्तों और जानवरों को उपचार के बाद उनके स्थान पर छोड़ दिया जाता।

संयम के इस समर्पण और तीव्र लगन को देखते हुए कभी–कभी उनके माता–पिता झुंझलाए भी। क्योंकि पढ़ाई और परीक्षा के समय में भी सूचना मिलने पर संयम को रोक पाना कठिन होता। वे कहते कि बेटा यह तुम्हारा काम तो ठीक है लेकिन जीवन में यह पढ़ाई भी बहुत महत्वपूर्ण है यह छूट जाएगी तो बहुत कठिनाई होगी। किन्तु संयम को समझाना उनके लिए कठिन होता।

लोग जब घर के आसपास साँप देखते हैं तो कहीं वह उन्हें डस न ले इस डर के कारण से वे उसे जान से मार देते हैं। यदि थोड़े समझदार लोग होते हैं तो किसी साँप पकड़ने वाले को बुला लेते हैं।

संयम ने जब यह देखा तो उन्होंने इन्हें बचाने के बारे में गहराई से सोचा। किन्तु साँप से डर तो संयम को भी लगता था तो उन्होंने एक साँप पकड़ने वाले सौरभकान्त मिश्रा से साँप पकड़ने की कला सीख ली और उन्होंने अब तक सबसे खतरनाक माने जाने वाले कोबरा सहित आठ सौ साँपों की जान को बचाया। उन्हें कई बार साँप की जान बचाने के लिए लोगों से लड़–भिड़ भी जाना पड़ा और ऐसा करते हुए अंतत: वे उनके बीच अपना पक्ष समझाने में सफल भी हुए। संयम ने लगन से इतने अच्छे काम किए तो उनका नाम सबसे कम आयु के पशु बचावकर्ता के रूप में वर्ष २०२३ में 'इंडिया बुक ऑफ रिकार्डस' में दर्ज कर लिया गया। ऐसे में जब उन्हें एक दिन देश के राष्ट्रपति के द्वारा प्रधानमंत्री राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए चुने जाने की सूचना मिली तो उनके माता–पिता भी प्रसन्नता से झूम उठे। संयम के लगन, व समर्पण के इस कार्य पर राष्ट्रीय स्तर पर प्रामाणिकता की छाप लग गई थी। उनका प्रसन्न होना स्वाभाविक था।

संयम ने अन्य पुरस्कृत बच्चों के साथ नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के जन्मदिन वाले दिन प्रधानमंत्री निवास में उनसे भेंट की।

संयम आगे भी इस समाज सेवी कार्य को जारी रखना चाहते हैं। उन्होंने पुरस्कार पाने के दो महीने में 'ग्रीन अर्थ गार्जियन्स' नाम से स्वयं सेवी संगठन बनाया जिसमें उत्साह जनक प्रतिक्रिया देते हुए सात राज्यों में पाँच हजार से भी अधिक स्वयंसेवी जुड़ गए।

आप भी यदि चाहें तो इन्टाग्राम पर बने मास्टर संयम और 'ग्रीन अर्थ गार्जियन्स' पेज के माध्यम से जुड़ सकते हैं। अभी बिहार की राजधानी पटना में किलकारी भवन के सहयोग से पशुओं के प्रति जागरूकता का सफल कार्यक्रम कर संयम ने एक हजार लोगों को इस अभियान से जोड़ा।

नन्हे मित्रो!

धरती के सब जीव–जन्तुओं का आपस में नाता।
एक अगर हो दुखी दूसरा कैसे सुख पा पाता।।
जब भी जहाँ मिले अवसर हम हरें दूसरों के दुख।
कहते सभी यही हमसे हैं, इसमें ही असली सुख।।

कुचिपुड़ी नृत्यांगना : लक्ष्मी प्रिया

विश्व में भारतीय संस्कृति के एक प्रतीक हमारे शास्त्रीय नृत्य भी हैं। इन्हीं में भारत के सबसे प्राचीन शास्त्रीय नृत्यों में से एक है कुचिपुड़ी नृत्य। जिसका जन्म आंध्रप्रदेश राज्य के कृष्णा जिले के कुचिपुड़ी नामक एक गाँव में हुआ।

हजार वर्ष से भी अधिक पुराना यह दक्षिण भारत का नृत्य सारे संसार में अपनी विशिष्टता के कारण प्रिय है। यह एकमात्र ऐसा शास्त्रीय नृत्य है जिसका नाम किसी गाँव के नाम पर है।

इस नृत्य की विशेषता है कि इस नृत्य में पैरों की जटिल थिरकन सुन्दर चाल और मुख पर सूक्ष्म भावों का प्रदर्शन करना होता है। इसकी संगत में कर्नाटक संगीत के साथ विशिष्ट वाद्ययंत्रों में मृदंगम, झांझ, वीणा, बाँसुरी और तंबूरा सम्मिलित होता है। पहले इस नृत्य को केवल पुरुष ही किया करते थे। परन्तु अब इसमें अनेक नर्तकियों का बोल बाला है।

यही सब कारण थे कि आन्ध्रप्रदेश राज्य अब तेलंगाना के हनमकोंडा जिले के एडव्होकेट कॉलोनी में रहने वाले राकेश कुमार और शैलता की बेटी पेंडयाला लक्ष्मीप्रिया ने मात्र सात वर्ष की वय से ही इस नृत्य में अपनी रुचि दिखानी आरंभ कर दी।

जब पहली बार लक्ष्मी प्रिया ने कुचिपुड़ी नृत्य करने की इच्छा जताई तो आश्चर्यजनक रूप से उसे अपनी माँ और दादी का समर्थन मिला। क्योंकि उनकी माँ और उनकी दादी के मन में कहीं न कहीं इस नृत्य को सीखने की साध उनके मन में अपने बचपन से रही थी। जो अनेक कारणों से पूरी न हो सकी परन्तु जब उन्हें लगा कि अब वे अपनी मन की इच्छा पेंडयाला लक्ष्मीप्रिया के माध्यम से पूरी कर सकती हैं तो उन्होंने अपना पूरा समर्थन लक्ष्मीप्रिया के पक्ष में दे दिया। अपने नृत्य सीखने के अदम्य उत्साह के कारण लक्ष्मीप्रिया ने बहुत कम आयु में इसका अभ्यास करना आरंभ कर दिया था।

यद्यपि लक्ष्मीप्रिया के पिता राकेश कुमार इस पक्ष में नहीं थे कि उनकी बेटी पढ़ाई से ऊपर नृत्य को महत्व दे। आरंभ में उनका यही मानना था कि नृत्य अभिरुचि के रूप में तो ठीक हैं थोड़ा बहुत कर लो लेकिन अंततः जीवन में पढ़ाई सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। इसी बीच हैदराबाद की एक अंतरविद्यालयीन प्रतियोगिता में लक्ष्मीप्रिया ने भाग लिया।

इस प्रतियोगिता में सभी शास्त्रीय नृत्य में कुचिपुड़ी नृत्यांगना के रूप में लक्ष्मीप्रिया अपने प्रदर्शन के बल पर सर्वप्रथम घोषित की गई।

निर्णायकों ने कहा कि तुम इस नृत्य साधना को कभी मत छोड़ना। देखना निश्चय ही तुम एक दिन

संसार में भारतीय संस्कृति की ध्वजा को लहराओगी। हजारों की भीड़ के बीच यह सब देख सुनकर राकेश कुमार गद्‌गद हो गए। उन्होंने उसी दिन से मन में तय कर लिया कि अब वे लक्ष्मी प्रिया को नृत्य करने से कभी नहीं रोकेंगे। अपनी विकलांगता को भूलकर उन्होंने लक्ष्मी प्रिया को उसकी इस धुन में हर संभव सहायता करने का निर्णय कर लिया।

लक्ष्मी प्रिया ने भी वचन दिया कि वह अपनी अभिरुचि के साथ-साथ अपनी पढ़ाई पर भी पूरा ध्यान देगी। आगे चलकर उन्होंने अपना यह वचन निभाया भी और पढ़ाई और नृत्य में एक संतुलन बनाकर रखा।

यह एक सुखद संयोग ही था कि उन्हें वारंगल के इस नृत्य के कुशल प्रशिक्षक प्रसिद्ध कुचिपुड़ी नर्तक बी. सुधीर राव का आशीर्वाद मिला। जब बी. सुधीर राव ने लक्ष्मी प्रिया के नृत्य को देखा तो उन्हें लक्ष्मी प्रिया के चेहरे पर भावों को प्रस्तुत करना बहुत अच्छा लगा। उन्हें लगा कि मुख पर ऐसे भाव लाना सरल नहीं होता। ऐसे भाव स्थानीय कुचिपुड़ी नृत्यांगना शोभा नायडू के मुख पर ही आते हैं।

उन्होंने लक्ष्मी प्रिया को कुचिपुड़ी नृत्य का प्रशिक्षण देने का निर्णय कर लिया। मन में लगी लगन निरंतर अभ्यास और कुशल प्रशिक्षण से लक्ष्मी प्रिया के नृत्य में दिनों दिन निखार आता गया।

इसी बीच कोविड आ गया। शाला की पढ़ाई बाहर जाने की सारी गतिविधियाँ ठप्प हो गईं। किन्तु लक्ष्मी प्रिया ने इस आपदा को अवसर की तरह लिया और जी जान से अपने नृत्य के अभ्यास को सतत रखा।

जिससे उनके नृत्य प्रदर्शन में लोगों को मंत्रमुग्ध करने की क्षमता का विकास हो गया। शास्त्रीय नृत्य में शब्दों के अनुरूप भावों का इस तरह प्रदर्शन आसान नहीं होता। मात्र चौदह वर्ष की आयु में वयस्क सत्यभामा जैसे किरदार को मंच पर हजारों की भीड़ के सामने सुन्दरता से प्रस्तुत करना लक्ष्मी प्रिया के परिश्रम और लगन की कहानी को दर्शाता है।

धीरे-धीरे उनके इस नृत्य प्रदर्शनों का वृत्त बढ़ता गया। लक्ष्मी प्रिया ने न केवल अपने राज्य के हैदराबाद सहित विभिन्न नगरों में अपनी कला की सुरभि बिखेरी बल्कि आन्ध्रप्रदेश की ओर से तमिलनाडू, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, दिल्ली आदि राज्यों में विभिन्न शहरों में होने वाले नृत्य समारोहों में अपनी चमकदार प्रस्तुति देकर धूम मचा दी।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र नई दिल्ली की ओर से देश के प्रतिभाशाली बाल कलाकारों को दी जाने वाली छात्रवृत्ति भी लक्ष्मी प्रिया को प्राप्त हुई।

एनसीईआरटी नई दिल्ली के द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर भुवनेश्वर ओड़ीसा में आयोजित राष्ट्रीय कला उत्सव प्रतियोगिता का आयोजन किया तो उसमें लक्ष्मी प्रिया ने शास्त्रीय नृत्य श्रेणी में निचले स्तर से प्रतियोगिता में भाग लेकर जीतते हुए भारत के सभी

शास्त्रीय नृत्यों में प्रथम पुरस्कार अर्जित किया।

इस उल्लेखनीय उपलब्धि ने लक्ष्मी प्रिया की बाल प्रतिभा को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित कर दिया। इन सभी विधाओं के राष्ट्रीय विजेताओं से देश के प्रधानमंत्री जी ने २०२२-२३ की परीक्षा पर चर्चा कार्यक्रम में विशेष भेंट कर इनकी प्रतिभा की प्रशंसा करते हुए उनकी कुचिपुड़ी नृत्यांगना के वेष में साथ में फोटो लिया।

कुचिपुड़ी और मोहिनीअट्टम की सर्वश्रेष्ठ कलाकार होने के कारण लक्ष्मी प्रिया को 'लास्यप्रिया' की उपाधि प्रदान की गई। उनका नाम २०२० की आर्ट बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में अंकित किया गया।

वर्ष २०२४ के प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार प्राप्त उन्नीस बच्चों में सारे देश से नृत्य कला में चुनी जाने वाली पेंडयाली लक्ष्मी प्रिया अकेली बाल नृत्यांगना रही।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर देश की राष्ट्रपति महोदया द्रौपदी मुर्मू ने उन्हें प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार २०२४ से सम्मानित किया। उन्होंने एक बार फिर देश के प्रधानमंत्री जी से चयनित बच्चों और अपनी माँ तथा गुरु के साथ भेंट की।

प्रधानमंत्री ने उन्हें पहचानते हुए परीक्षा पर चर्चा कार्यक्रम का उल्लेख किया और भारतीय संस्कृति की ध्वजवाहिका के रूप में लक्ष्मी प्रिया को 'चैतन्या' नाम एक विशिष्ट संबोधन भी दिया। लक्ष्मी प्रिया गणतंत्र दिवस की ऐतिहासिक परेड का हिस्सा बनी। वे दिन लक्ष्मी प्रिया के लिए न भुलाए जाने वाले रहे।

लक्ष्मी प्रिया के गुरु बी. सुधीर राव कहते हैं कि शास्त्रीय नृत्य में निपुणता पाना सरल काम नहीं है। यह बहुत बड़ी साधना तपश्चर्या है। फिर भी अपनी परिश्रम और लगन से लक्ष्मी प्रिया ने इसमें वह स्थान बनाया है कि मुझे इनके गुरु होने पर गर्व का अनुभव होता है।

पुरस्कार के समय लक्ष्मी प्रिया काजीपेट के मोंटफोर्ट विद्यालय में दसवीं कक्षा की छात्रा थीं। उन्होंने अपने पिता से किया हुआ वादा निभाया और एक ओर जहाँ देश की राष्ट्रपति के हाथों 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' पाया वहीं सीबीएसई बोर्ड में ८५ प्रतिशत अंक प्राप्त कर अपने जुनून और पढ़ाई के बीच के संतुलन को बनाए रखा।

लक्ष्मी प्रिया का अपना यू ट्यूब चैनल 'लक्ष्मी प्रिया पेंडयाला' के नाम से है। जहाँ आप लक्ष्मी प्रिया के मनमोहक प्रदर्शन को स्वयं अपनी आँखों से देख सकते हैं।

नन्हे मित्रो!

यूँ ही जिंदगी बैठी कब तक, ऐसे वक्त गुजारेगी?
पहचानी अपनी क्षमता तो फिर असफलता हारेगी।
एक अकेले हम नहीं कहते कई उदाहरण सामने हैं,
लगे निरंतर रहे अगर तुम, मंज़िल तुम्हें पुकारेगी।।

*

बाल गणितज्ञ : अरमान उभरानी

हमारे देश के राज्य छत्तीसगढ़ के नगर बिलासपुर को न्यायधानी भी कहते हैं क्योंकि इस राज्य का उच्च न्यायालय इसी नगर में स्थित है। यही नहीं 'धान का कटोरा' कहे जाने वाले छत्तीसगढ़ का यह नगर अपने सुगंधित दूबराज चावल की विशेष किस्म के लिए भी जाना जाता है। यहाँ हथकरघा उद्योग के माध्यम से बनाई जाने वाली कोसे की साड़ियाँ भी देशभर में अपनी अलग पहचान रखती हैं।

वर्ष २०२४ के आरंभ में यह नगर एक बार फिर से चर्चा में आ गया जब इस नगर के तोरवा में रहने वाले मनीष उभरानी और साइना उभरानी के मात्र छ: वर्ष के बेटे अरमान उभरानी का नाम उन उन्नीस बच्चों की सूची में भारत सरकार द्वारा घोषित किया गया जिन्हें 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' दिया जाने वाला था।

सोचने की बात है कि मात्र छ: वर्ष की आयु में कोई बच्चा ऐसा क्या असाधारण कार्य कर सकता है जिससे देश की राष्ट्रपति महोदया उन्हें देश की राजधानी में बुलाकर अपने हाथों से यह राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान करें और देश के प्रधानमंत्री जी उनसे मिलकर उनकी प्रतिभा की सराहना करें।

आइए! हम आपको इन नन्हे अरमान उभरानी से मिलवाकर इनकी उसी असाधारण प्रतिभा से परिचित कराते हैं। अरमान उभरानी को गूगल बॉय भी कहा जाता है। क्योंकि जिस आयु में बच्चे बोलना और पढ़ना सीखते हैं उस आयु में बच्चे का मस्तिष्क यदि कम्प्यूटर की तरह काम करने लगे ऐसा बहुत कम देखने को मिलता है।

बात वस्तुत: यह है कि अरमान को बहुत छोटी अवस्था से गणित बहुत प्रिय है। उन्हें गणित के कठिन से कठिन प्रश्नों को हल करने में बड़ा आनन्द आता है।

गणित के पहाड़े याद करने में तो उन्हें विशेषज्ञता प्राप्त है। गुणा और भाग के प्रश्नों को भी वे चुटकियों में सुलझा देते हैं। उन्होंने केवल पाँच वर्ष की आयु में ही विश्व कीर्तिमान बना डाला।

अरमान के पिता मनीष, तोरवा में एक दाल मिल चलाते हैं। वे बैडमिन्टन के राष्ट्रीयस्तर के खिलाड़ी हैं। जबकि उनकी पत्नी साइना एक छोटा-सा 'प्ले वे' स्कूल चलाती हैं। आरंभ में साइना जब अरमान के पढ़ाने के लिए बैठीं तो उन्होंने देखा कि अरमान की रुचि गणित विषय में कुछ विशेष ही थी। पहले तो उन्होंने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

किन्तु जब उन्होंने देखा कि अरमान बार-बार उनसे गणित के ही प्रश्न पूछा करते हैं, उसमें भी विशेष रूप से गुणन के सवालों की ओर उनका रुझान अधिक रहता है। यही नहीं उन्होंने यह भी नोटिस किया कि अरमान खेल-खेल में पहाड़े बिलकुल सही-सही पढ़ रहे हैं और उनकी यह प्रतिभा दिनों दिन लगातार बढ़ती जा रही है। अरमान की उस छोटी-सी अवस्था को देखते हुए यह आश्चर्य की बात थी। पहले तो उन्होंने इसकी स्वयं जाँच की और जब इस बात को बिलकुल सही पाया तो उन्होंने अपने पति मनीष को अरमान की इस उभरती प्रतिभा के बारे में बताया। जिसे जानकर वे भी चकित रह गए। उस समय अरमान की आयु मात्र चार वर्ष की रही होगी।

अब उन्होंने तय कर लिया कि अरमान की इस प्रतिभा को हमें संसार के सामने लेकर आना है। बस

उन्होंने इसके लिए मंच खोजने का प्रयास आरंभ कर दिया। और वह अवसर शीघ्र ही उनके हाथ लग गया।

उन्होंने एक ऑन-लाइन प्रतियोगिता में पहली बार भाग लिया। जिसमें अरमान ने पाँच वर्ष की आयु में दो से चालीस तक के पहाड़े मात्र आठ मिनट तीस सेकेण्ड में हल करके लंदन के हावर्ड विश्व रिकार्ड में अपना स्थान बना लिया। और इसी तरह इंडिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड के लिए हुई एक ऑनलाइन परीक्षा में अरमान ने गणित के छियासी प्रश्नों को मात्र सोलह मिनट में हल करके सबसे छोटी आयु में यह काम करने वाले बच्चे के रूप में इस कीर्तिमान को भी अपने नाम कर लिया।

यही नहीं मात्र तीन महीने के अंतराल में सौ गुणा के सवालों को मात्र बारह मिनट अट्ठाइस सेकण्ड में हल करके अरमान स्वयं अपने ही कीर्तिमान को तोड़ने में सफल रहे। सुनने वाले अचंभित रह जाते हैं जब अरमान दो से लेकर चालीस तक के पहाड़े यूँ ही खटा-खट एबीसीडी की तरह सरलता से पढ़ते चले जाते हैं। अब तो उन्होंने इसे भी सुधाकर चालीस की अपेक्षा सौ तक पहाड़े याद कर लिए हैं।

यह क्रम यही पर नहीं थमा। अरमान ने तीन पुस्तकें भी लिखी हैं। उन्होंने संसार में किसी पुस्तक श्रृंखला के सबसे कम आयु के लेखक के रूप में अपना नाम हार्वर्ड वर्ल्ड रिकार्ड लंदन में अंकित कराया। पाँच वर्ष की आयु में ही उन्होंने द पिंक डाल्फिन्स, प्लेनेटरी वर्ल्ड और माई कॉन्टीनेंट एशिया, नामक तीन पुस्तकें लिख लीं थीं।

पिंक डाल्फिन्स पुस्तक में अरमान ने सात मित्रों की एक काल्पनिक कहानी लिखी है जो डाल्फिन के साथ तैरने और सबक सीखने के लिए समुद्र में कूदते हैं। यह पुस्तकें अमेजन पर उपलब्ध हैं। विश्व में सबसे कम आयु में सबसे अधिक पुस्तकें लिखने का यह कीर्तिमान अरमान के नाम इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में लिखा गया।

सूर्यदत्ता ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट्स पुणे ने भी अरमान को 'एक्सीलेन्स इन द फील्ड ऑफ लिटरेचर यंगेस्ट आर्थर' नामक राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें **वंडर बॉय ऑफ छत्तीसगढ़ और गूगल मैथ्स् बॉय** कहा जाने लगा।

इतनी कम आयु में इतनी सारी उपलब्धियाँ प्राप्त कर अरमान ने स्वयं को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार के योग्य बना लिया। उन्हें वर्ष २०२४ का यह पुरस्कार महिला और बाल विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा देशभर से चुने गए अन्य प्रतिभाशाली अट्ठारह बच्चों के साथ देश की राष्ट्रपति महोदया ने देश की राजधानी दिल्ली में दिया।

नन्हे मित्रो!

पहचानो क्या छुपा हुआ है, अपने तन में मन में।
बिजली छुप जाती बादल में, तारे नील गगन में।।
ऊर्जा कितनी भरी हुई होती है सागर जल में।
देते दिखा परम अणु छोटे, शक्ति असीमित पल में।।

✲

शतरंज की नन्ही खिलाड़ी : चार्वी अनिल कुमार

संसार में शतरंज के खेल का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है। इस खेल का जन्म हमारे देश भारत में ही हुआ था। तब इसे चतुरंग के नाम से जाना जाता था। विश्वनाथन आनन्द देश के जाने-माने शतरंज खिलाड़ी हैं।

हमारे देश के कर्नाटक राज्य में हासन के रहने वाले अनिल कुमार और उनकी पत्नी अखिला बेंगलूरू स्थित एक आई टी कम्पनी में काम करते हैं। वे सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं। चूँकि वे दोनों ही नौकरी करते थे इसलिए उन्हें अपनी चार वर्षीय बेटी चार्वी को डे-केयर सेन्टर में रखना पड़ा।

उस डे-केयर सेन्टर में चार्वी ने देखा कि कुछ बड़े बच्चे समय बिताने के लिए इन्डोर गेम खेलते हैं। कुछ समय विभिन्न खेलों को देखने के बाद चार्वी की रुचि शतरंज में लग गई। इस बौद्धिक खेल ने उसको अपनी ओर आकर्षित कर लिया।

और फिर एक दिन चार्वी ने अपने माता-पिता से शतरंज के सेट की माँग कर दी। चार्वी की इच्छा देखकर उन्होंने उसे एक चेस सेट लाकर दे दिया। अब चार्वी डे-केयर में वहाँ के बच्चों के साथ शतरंज खेलने का अभ्यास करने लगी।

उसे यह खेल इतना अच्छा लगने लगा कि डे-केयर से आकर वह अपने माता-पिता को अपने साथ खेलने के लिए कहती। उसके माता-पिता दोनों को ही शतरंज खेलने के बारे में कुछ पता नहीं था। इसलिए उन्होंने यू ट्यूब ट्यूटोरियल से इस खेल के नियमों और बारीकियों को सीखा और फिर वे चार्वी के मन को देखते हुए उसके साथ शतरंज खेलने लगे। जिसमें चार्वी अधिकांश उन्हें मात दे देती थी।

जैसे-जैसे समय बढ़ा चार्वी की रुचि शतरंज में और बढ़ती गई। चार्वी की खुशी और रुझान को देखते हुए उसके माता-पिता ने इंटरनेशनल मास्टर बी एस शिवानन्द की कर्नाटक शतरंज अकादमी में उसको प्रवेश दिला दिया।

वर्ष २०१८ में चार्वी ने शतरंज प्रतियोगिताओं में भाग लेना प्रारम्भ किया। इनमें उसका प्रदर्शन अच्छा रहा। कर्नाटक राज्य स्कूल शतरंज टूर्नामेंट वर्ष २०१९ में अण्डर-६ श्रेणी में वह दूसरे स्थान पर रही। यह चार्वी और उनके माता-पिता के लिए खुश होने वाली बात थी।

इसी बीच आई महामारी कोरोना के चलते सारा विश्व थम गई और सारे काम रुक गए। लेकिन चार्वी का शतरंज खेलने का अभ्यास चलता रहा। कोरोना के बाद जैसे ही दुनिया ने गति पकड़ी, चार्वी ने नेशनल स्कूल ऑनलाइन अण्डर-७ गर्ल्स शतरंज टूर्नामेंट की ओपन कैटेगरी में चौथा स्थान प्राप्त कर लिया।

मजे की बात यह थी कि इस प्रतियोगिता के एक सौ अट्ठावन लड़कों के बीच वह एकमात्र लड़की प्रतिभागी थीं।

इसके साथ ही चार्वी ने जम्मू में अण्डर-१० चैम्पियनशिप और विजयवाड़ा में अण्डर-८ प्रतियोगिता में एक भी मैच हारे बिना इस चैम्पियनशिप पर कब्जा जमा लिया। इसमें हुए ग्यारह राउण्ड के मैच में उसने दस राउण्ड जीते थे और दोनों इवेन्ट में मात्र एक राउण्ड ड्रा रहा था। यह उसकी उल्लेखनीय उपलब्धि थी।

चार्वी की इन उपलब्धियों को देखते हुए इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए बार-बार जाने के

कारण चार्वी की माँ अखिला ने अपनी नौकरी छोड़ दी थी। उत्साहित चार्वी ने उनके फैसले को सही ठहराते हुए अपने परिश्रम और लगन से चार अंतरराष्ट्रीय और तीन राष्ट्रीय प्रतियोगिताएँ जीत लीं और अकेले वर्ष २०२२ में छ: खिताब जीतकर उन्होंने एक रिकार्ड बना दिया। चार्वी ने २०२२ में जॉजिया के बटुमी में आयोजित अण्डर-८ विश्व शतरंज और एशियायी युवा शतरंज चैम्पियनशिप में पाँच स्वर्ण और एक रजत पदक जीत लिया। जबकि राष्ट्रीय स्तर पर उन्होंने वर्ष २०२१ और २०२२ में अण्डर-७ और अण्डर-८ और अण्डर-१० श्रेणियों में सर्वोच्च खिताब अपने नाम कर उल्लेखनीय उपलब्धि अर्जित की।

चार्वी की इतनी कम आयु में खेल के क्षेत्र में इतनी सारी इन उपलब्धियों को देखते हुए उनका नाम प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार २०२४ के लिए चुना गया। नौ वर्ष की चार्वी ने प्रधानमंत्री जी से भेंट करते समय उनके कहा कि- ''वे शतरंज के खेल को एक विषय के रूप में पाठ्यक्रम में सम्मिलित करवा दें।'' उनके द्वारा चार्वी को उपहार में कन्नड़ भाषा की पुस्तक दी गई।

चार्वी का अर्थ होता है सुन्दर। पुरस्कार लेकर वापस आने पर चार्वी का अपने विद्यालय में भी भव्य स्वागत हुआ। क्यों न होता उनके साथ पढ़ने वाली नन्ही-सी सुन्दर चार्वी ने अपने परिश्रम और लगन से उनका और उनके विद्यालय का मान भी तो बढ़ाया था।

भारत के ६२वें ग्रैन्ड मास्टर श्यामा मिश्रा और ग्रैन्ड मास्टर आर. प्रज्ञानन्द के गुरु आ. बी. रमेश से प्रशिक्षण पाने वाली चार्वी अनिल कुमार का मानना है कि अभी तो उनकी यात्रा प्रारम्भ हुई है। मेरा ध्यान पुरस्कारों पर न होकर भविष्य के लिए अपने किए जाने वाले प्रदर्शन कर केन्द्रित है।

चार्वी के आदर्श हंगरी के ग्रैंडमास्टर जुडिट

पोलगर और भारत के महान शतरंज खिलाड़ी विश्वनाथन आनन्द हैं। चार्वी का कहना है कि राष्ट्रीय स्तर पर किसी प्रतियोगिता में भाग लेना और खिताब जीतना निश्चय ही अच्छा अनुभव है। किन्तु अब मेरी दृष्टि अर्जुन की चिड़िया की आँख की तरह विश्व चैम्पियनशिप पर लगी हुई है।

इसके लिए चार्वी प्रतिदिन तीन से चार घंटे अभ्यास करती है। जब छुट्टियाँ होती हैं तो यह अभ्यास का समय बढ़कर छ: घंटे तक बढ़ जाता है। इसके लिए वह चेन्नई की महिला ग्रैन्ड मास्टर आरती रामास्वामी से भी प्रशिक्षण ले रही है।

एक साधारण बच्चे की श्रेणी से उठकर आज चार्वी विश्व की सबसे होनहार युवा प्रतिभाओं में सम्मिलित हो गई है। हालाँकि इसके लिए उसे बहुत कुछ छोड़ना भी पड़ा चार्वी ने पिछले पाँच वर्षों में घर पर टेलीविजन नहीं देखा है। उन्होंने यदि उन दिनों में टेलीविजन देखा होता तो संभवत: संसार चार्वी को यहाँ नहीं देख पाता जहाँ आज देख रहा है या भविष्य में देखेगा।

नन्हे मित्रो!

कब बीजों को पता कि उनमें, कितना भारी वृक्ष छिपा?
जहाँ कहीं पर लगता हो मन, उसमें रुचियाँ खूब दिखा।।
मेहनत में कुछ कसर न करना, कामयाब होना ही है।
पा सकते हर वो मन चाहा, जिसको अपने आप लिखा।।

*

संगीत साधक : इशफ़ाक़ बट्ट

कश्मीर को हमारे देश का मुकुट कहा जाता है। कश्यप ऋषि की तप:स्थली कश्मीर को धरती का स्वर्ग भी कहते हैं। कहते हैं कि कश्मीर के बारामूला (प्राचीन नाम वराहमूल) जिले की स्थापना २३०६ ईसा पूर्व राजा भीमसेन ने की थी। एक समय में यह जिला कश्मीर घाटी का प्रवेश द्वार था और पीओके के मुजफ्फराबाद और पाकिस्तान के रावलपिंडी के रास्ते में पड़ता था।

यह श्रीनगर से नीचे की ओर झेलम नदी के किनारे बसा है।

इसी बारामूला में अब्दुल हमीद बट्ट रहते हैं जो एक अच्छी संगीतकार हैं। पिछली चार पीढ़ियों से उनके यहाँ रबाब बजाने की परम्परा चली आ रही थी। उनके दादा सनाउल्ला बट्ट और उनके भाई गुलू बट्ट बहुत बड़े रबाब बजाने वाले थे।

ऐसे ही उनके पिता गुलाम कादिर बट्ट भी रबाब बजाते थे। कश्मीर में रबाब बजाने वालों का घराना उनके पूर्वजों के नाम पर ही माना जाता है।

अब्दुल हमीद बट्ट की कला के प्रति लगन समर्पण और इससे मिलने वाले सम्मान ने उनके बेटे इशफ़ाक़ बट्ट को संगीत सीखने के लिए प्रेरित किया।

एक दिन आठ वर्ष के इशफ़ाक़ ने अपनी माँ से अपने मन की बात बताई तो उनकी माँ ने आग्रह करते हुए कहा कि इशफ़ाक़ भी रबाब बजाना सीखना चाहता है। आप उसे सिखा दीजिए।

हमीद बट्ट का मानना था कि अभी इश्फ़ाक़ छोटा है उसे अपनी पढ़ाई पर अधिक ध्यान देना चाहिए। किन्तु जब उन्होंने इशफ़ाक़ को बुलाकर उससे इसके बारे में बात की तो उन्हें लगा कि इशफ़ाक़ के मन में रबाब सीखने की ललक जाग चुकी है। अब उसकी इच्छा को अधिक नहीं रोका जा सकता।

बस फिर क्या था उन्होंने इशफ़ाक़ को बता दिया कि इसके लिए उसे मन लगाकर नियमपूर्वक लगातार भरपूर रियाज यानि कि बहुत अभ्यास करना होगा। लापरवाही बिलकुल भी नहीं चलेगी। क्योंकि हर कला पर्याप्त लगन समर्पण और सतत अभ्यास माँगती है।

सीखने की अनुमति मिलते ही इशफ़ाक़ का मन प्रसन्न हो गया। अब उन्होंने लगन से रबाब बजाना सीखना प्रारम्भ कर दिया। सुबह से ही अपने पिता के साथ नियमित अभ्यास चलने लगा। आरम्भिक जानकारियाँ होते ही उनको लगातार अभ्यास से जल्दी ही रबाब बजाना आने लगा। अपने पिता को तो उन्होंने पहले से ही बजाते देखा था। अब तो जरा भी गलती होते ही उसे बताने के लिए पिता जैसे गुरु मिले हुए थे।

घर से मिलने वाले प्रोत्साहन, निरंतर अभ्यास और अपनी लगन से इशफ़ाक़ की अँगुलियाँ रबाब पर थमने ही नहीं लगीं जमने भी लगीं, धुनों की परख के लिए जब उसके पिता रबाब पर होते तो वह घड़े को बजाते। इस तरह उसे सम पर रुकने की समझ भी आ गई। रात दिन महीनों और वर्षों के लगातार अनथक अभ्यास से इशफ़ाक़ का हाथ अब रबाब पर सधने लगा था।

अब उन्हें ऐसे मंच की तलाश थी जहाँ गुणी लोगों के बीच वह अपनी कला का प्रदर्शन कर सकें।

संयोग से वह अवसर महाराष्ट्र राज्य के पुणे शहर में होने वाले भाई मरदाना संगीत समारोह २०२० में मिल गया। जहाँ देश-विदेश के गुणी कलाकार पारखी श्रोताओं के बीच अपनी कला का प्रदर्शन करते थे। अब्दुल हमीद बट्ट को जाना था वे इस बार अपने साथ इशफ़ाक़ को भी ले गए। इतने बड़े संगीत समारोह में अपने इस पहले सार्वजनिक प्रदर्शन को लेकर इशफ़ाक़ के मन में बहुत उत्साह था तो कुछ संशय भी।

अपने इस प्रदर्शन से पहले मन में था कि पता नहीं कैसा प्रदर्शन होगा? कहीं कोई भूल न हो जाए। किन्तु जब प्रदर्शन के बाद सुनने वालों की तालियों की गड़गड़ाहट नहीं रुकी तो उनका मन आनंद से भर आया।

वहाँ अपने प्रदर्शन के आधार पर इशफ़ाक़ को विशेष राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया। साहस और आत्म-विश्वास बढ़ा तो फिर दिल्ली, लखनऊ और कोलकाता जैसे बड़े शहरों में इशफ़ाक़ ने अपनी कला का प्रदर्शन किया और लोगों का प्यार पाया।

जी-२० समिट और गुरु नानक देव के तीन सौ पचासवें समारोहों में दिल्ली और कश्मीर में तेरह वर्ष के इशफ़ाक़ ने एक बार फिर अपनी कला के प्रदर्शन से सुनने वालों को चमत्कृत कर दिया।

वर्ष २०२४ में गणतंत्र दिवस के अवसर पर सभी प्रधानमंत्री बाल पुरस्कार विजेता बच्चों के साथ इशफ़ाक़ को राजधानी दिल्ली में आमंत्रित किया गया। जहाँ देश के प्रधानमंत्री श्री. नरेन्द्र मोदी जी ने उन्हें अपने निवास पर बुलाकर उनसे खूब बात की। अगले दिन राष्ट्रपति बाल पुरस्कार प्रदान किया। फिर गणतंत्र दिवस के अवसर पर कर्त्तव्य पथ पर निकलने वाली ऐतिहासिक परेड में भी वे सब जीप पर बैठकर निकले।

इशफ़ाक़ के पिताजी ने कहा- ''बेटे! तुमने तो कमाल कर दिया। अभी इतनी से आयु में देश के राष्ट्रपति के हाथों से 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय पुरस्कार' पा लिया। अब तुम इसी हुनर में अपने पुरखों की पहचान को आगे बढ़ाओ। हाँ लेकिन पढ़ाई भी करते रहना क्योंकि पढ़ाई का भी अपना बहुत महत्त्व है।

इशफ़ाक़ अब बड़े मन से अपनी सातवीं कक्षा की पढ़ाई करते हुए रबाब बजाने का अभ्यास करते हैं क्योंकि उन्हें इस कला की सुगंध को संसार के कोने-कोने तक पहुँचाकर अपने पुरखों से विरासत में मिली इस रबाब वादन कला को और देश के नाम को ऊँचाई पर ले जाना है।

अपनी आयु के मित्रों के लिए उनका कहना है कि यदि आप मोबाइल में बेकार समय बिताने के अपनी रुचि को पहचान कर उसे विकसित करोगे तो तुम्हें स्वयं भी प्रसन्नता मिलेगी और दूसरों को भी प्रसन्न कर सकोगे।

नन्हे मित्रो!

मन से कर लें काम, नाम खुद ऊँचे हो जाएँगे।
आग लगन की जलती जिनमें, वे रास्ता पाएँगे।।
क्या अच्छा लगता है तुमको पहले करो इसे तय,
पकड़ राह चलते ही गए तो 'लक्ष्य' मिला पाएँगे।।

✲

अन्याय के विरुद्ध : ज्योत्सना अख्तर

भारत की उत्तर पूर्वी सीमा पर स्थित त्रिपुरा राज्य अत्यन्त मनोरम है। इसके उत्तर पश्चिम और दक्षिण में बांग्लादेश स्थित है और पूर्व में असम और मिजोरम जैसे राज्य हैं। पहले यहाँ राजवंश का शासन था। वर्ष १९५६ में त्रिपुरा भारतीय गणराज्य में सम्मिलित हुआ और १९७२ में इसे एक अलग राज्य का दर्जा मिला। इसका आधे से अधिक भाग जंगलों से घिरा हुआ है।

त्रिपुरा के अधिकांश लोगों का धर्म हिन्दू है। यहाँ पर सबसे बड़े अल्पसंख्यक मुस्लिम हैं। दक्षिणी त्रिपुरा के अमजदनगर में रहने वाली पन्द्रह वर्षीय ज्योत्सना अख्तर इसी अल्पसंख्यक समुदाय से है। आजादी के बाद सारे देश में शिक्षा का प्रसार-प्रचार बढ़ा। वर्ष १९२९ में लड़कियों की शादी की जो आयु चौदह वर्ष थी उसे देश की स्वतंत्रता के बाद १९४९ में पन्द्रह वर्ष और १९७८ में अट्ठारह वर्ष कर दी गई जिसे अभी नया कानून बनाकर इक्कीस वर्ष किए जाने की संभावना है।

किन्तु अभी भी बहुत सारे लोग पुरानी रूढ़िवादी सोच से ग्रस्त हैं। कम आयु में विवाह कर देना उनकी इसी सोच का अंग है। वे अकेले ऐसे नहीं हैं उनकी जैसी समझ रखने वाले देश के अन्य भागों की तरह उस क्षेत्र में भी अभी हैं।

ज्योत्सना अपनी शाला की पढ़ाई में अच्छी थी और वह उन दिनों नवीं कक्षा में पढ़ रही थी। उसने आठवीं कक्षा अच्छे परिणामों के साथ उत्तीर्ण की थी। वह अपनी पढ़ाई आगे जारी रखने के लिए बहुत उत्साहित थी। किन्तु इसी बीच ज्योत्सना के माता-पिता ने उसका विवाह करने का निश्चय कर लिया। उनका देखा गया वह लड़का धनी परिवार का था, सरकारी नौकरी में था किन्तु उसकी आयु ज्योत्सना की आयु से दुगनी से भी अधिक थी।

जब घर में माता-पिता के बीच उसकी शादी की चर्चा बार-बार होने लगी तो उसने इस विवाह का दृढ़ता से विरोध किया और कहा- ''आप लोग ऐसी बात क्यों कर रहे हैं? अभी मेरी उम्र की क्या है अभी तो मैं केवल नवीं कक्षा में ही पढ़ रही हूँ। कुछ वर्ष और थोड़ा लिख-पढ़ लेने दो मुझे।''

उन्होंने कहा- ''लिखने पढ़ने के लिए किसने रोका है। शादी के बाद में लिखती-पढ़ती रहना। पूछ लेते हैं यह बात लड़के वालों से।''

ज्योत्सना ने कहा- ''नहीं, पहले पढ़ाई और फिर बाद में सही आयु में शादी होगी। मैंने मना तो नहीं किया इसके लिए। फिर देश का कानून भी हमें कम आयु में शादी करने से रोकता है।''

ज्योत्सना का यह तर्क सुनते ही वे भड़क गए। बोले- ''बहुत पढ़ गई है तू इतना कि अब हमें भी पढ़ाने लगी है। अब जो आगे और पढ़ी तो पता नहीं जाने क्या करेगी!''

ज्योत्सना ने जवाब में कहा- ''मैं कोई गलत बात तो नहीं कह रही हूँ। हाँ, आप लोग अवश्य गलत कर रहे हैं।''

''हम गलत कर रहे हैं? हैं.... हम गलत कर रहे हैं? अब तक तो नहीं कर रहे थे पर अब अवश्य करेंगे। आज से तेरा शाला जाना-आना बंद। घर में बैठ। अब कहीं नहीं जाएगी शादी होने तक।''

ज्योत्सना के बड़े भाई सद्दाम और उससे भी

बड़ी शादी-शुदा उसकी बड़ी बहन हुस्ना अख्तर उसके पक्ष में थे। वे उसके लिए बात कहते किन्तु उनके माता-पिता तो अपनी ही जिद पर अड़े थे।''

अब तो रात-दिन घर में उसकी शादी और शादी की तैयारियों की बात होने लगी। उसे घर में लगभग कैद कर लिया गया था। मोबाइल ले लिया गया और उसकी अपनी सहेलियों से बातचीत करने पर भी पाबन्दी लगा दी गई। वह अपनी बात माता-पिता को समझा पाने में असमर्थ थी या वे लोग उसकी बात को सुनना ही नहीं चाहते थे।

समय धीरे-धीरे बीतता जा रहा था और ज्योत्सना की चिंता बढ़ती जा रही थी। उसके चारों ओर के रास्ते बन्द होते जा रहे थे। उसे कोई समाधान नहीं सूझ रहा था।

वर्ष २०२० में कोरोना के समय वहाँ के जिलाधिकारी साजू ए वाहिद की पहल पर पूरे दक्षिणी त्रिपुरा जिले के साथ बेलोनिया सबडिवीजन के अन्तर्गत अमजदनगर गाँव के उस हाईस्कूल में भी 'बालिका मंच' का गठन किया गया था। जिसमें ज्योत्सना पढ़ती थी। इसका उद्देश्य बालिकाओं के हितों की रक्षा करना था। शाला की शिक्षिका उदिता सरकार इस मंच की इंचार्ज और ज्योत्सना अख्तर उसकी संयोजक थी।

अब इसको क्या कहा जाए कि बालिका मंच की संयोजक थी फिर भी उसके ही अधिकारों का हनन हो रहा था और वह इसमें कुछ नहीं कर पा रही थी। एक दिन उसे अपने शाला की उन्हीं शिक्षिका से बात करते देखकर पिता द्वारा उसका मोबाइल छीन लिया गया था।

एक दिन अवसर पाकर उसकी बड़ी बहन ने अपने मोबाइल से ज्योत्सना की बात उसकी शाला शिक्षिका से करा दी। जब उन्हें सारी बातें पता चलीं तो उन्होंने चाइल्ड हेल्प लाइन और स्थानीय प्रशासन की सहायता से सबसे पहले ज्योत्सना को घर की कैद से आजाद कराया। इसके बाद उन्होंने अन्य शिक्षकों शाला के प्रधानाचार्य सुब्रतो चक्रवर्ती और अधिकारी सुबीर मजूमदार को लेकर ज्योत्सना के माता-पिता के साथ अनेक परामर्श सत्र आयोजित किए गए और उन्हें अपने निर्णय पर पुनर्विचार करने के लिए राजी कर लिया।

रचनाकार परिचय

इस अंक की प्रेरक सामग्री के लेखक : श्री. रजनीकांत शुक्ल

बाल साहित्य की विभिन्न विधाओं में जिनका सर्जन अनवरत चलता रहता है। लगभग बाल साहित्य की चौदह पुस्तकें और लगभग सभी प्रसिद्ध बाल पत्रिकाओं में आपकी बालसाहित्य की रचनाएँ दशकों से बच्चों में प्रेरणा भरती हैं, उनकी सुरूचि बढ़ाती है। अनेक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं व आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि पर आपकी सक्रिय उपस्थिति रहती है। कई पाठ्यक्रमों में जिनकी रचनाएँ सम्मिलित हैं। विशेषत: बहादुर बच्चों पर लिखते आपकी लेखनी अद्भुत आकर्षण रचती है।

ऐसे अनेक पुरस्कारों, सम्मानों एवं अलंकरणों से विभूषित; लेखक , संपादक, सर्जक **श्री. रजनीकांत जी शुक्ल** ने अत्यन्त सहजता से हमारा अनुरोध स्वीकार कर इस अंक के लिए विशिष्ट प्रतिभाशाली बच्चों पर सामग्री एवं चित्र उपलब्ध कराए हैं। आपकी सदाशयता के लिए हार्दिक धन्यवाद।

-संपादक

दूसरी ओर उन्होंने सरकारी नौकरी कर रहे उस लड़के पर भी इस कानून के विरुद्ध होने वाले काम के परिणामों से अवगत कराया। परिणाम यह हुआ कि उसने भी अपने पैर पीछे खींच लिए। यही कारण था कि ज्योत्सना के माता-पिता ने भी अपना निश्चय बदल दिया।

कहने सुनने में यह बात बहुत सामान्य लगती है किन्तु इसके लिए ज्योत्सना को कितनी जद्दो-जहद झेलनी पड़ी अब यह तो उसी का दिल जानता था। किन्तु इन संघर्ष की परिस्थितियों ने ज्योत्सना को आग में तपकर कुन्दन की तरह चमका दिया था।

अब ज्योत्सना ने तय कर लिया कि जो कम आयु में जबर्दस्ती करके शादी कराने का अन्याय उसके साथ हो रहा था अब वह इस अन्याय को अपने रहते कम से कम अपने गाँव में किसी और लड़की के साथ नहीं होने देगी।

बस फिर क्या था ज्योत्सना को गाँव में जहाँ कहीं भी ऐसी खबर का पता चलता वह 'बालिका मंच' की सहायता से अपने सभी प्रयासों के साथ इस

अन्याय को रुकवाने पहुँच जाती। लगभग एक वर्ष के बीच उसने पाँच और ऐसी कम आयु में होने वाली शादियों को अपने विद्यालय के 'बालिका मंच' के साथियों और स्थानीय प्रशासन के प्रयासों से रोकने में सफलता पाई।

ज्योत्सना अख्तर की तीन लगन और साहस के साथ किए गए इस समाज सेवा के कार्य की क्षेत्र के लोगों के बीच काफी चर्चा हुई। संचार माध्यमों ने नन्हीं ज्योत्सना की इस बहादुरी और साहस की सराहना की और इसको प्रकाशित प्रसारित भी किया।

भारत सरकार का महिला और बाल विकास मंत्रालय प्रति वर्ष देश के ऐसे बच्चों को चुनकर गणतंत्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति के हाथों सम्मानित करता है। इस सामाजिक बुराई के प्रति ज्योत्सना के इस समर्पण और लगन को देखते हुए उसको प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार २०२४ के लिए चुन लिया गया।

देश की राजधानी दिल्ली में अपने भाई और अपने विद्यालय की शिक्षिका के साथ पहुँचकर ज्योत्सना ने यह पुरस्कार राष्ट्रपति महोदया के हाथों प्राप्त किया। उसके इस साहस की सराहना प्रधानमंत्री जी ने भी उससे मिलकर की।

गणतंत्र दिवस की परेड और इतने अतिविशिष्ट लोगों से मिलकर उनकी प्रशंसा ने ज्योत्सना के साहस को कई गुना बढ़ा दिया। उसने अपनी दसवीं कक्षा की परीक्षा को अच्छे अंकों से उत्तीर्ण किया। अब वह समाज की सेवा के क्षेत्र में कुछ और अधिक ऊर्जा के साथ काम करने का मन बना चुकी है।

नन्हे मित्रो!

दिखे अगर अन्याय तुम्हें तो, उसे न होने देना।
जितना भी संभव हो उतना कर विरोध तुम लेना।।
मेहनत जो करता है उसका फल मिलता है हर सू।
कहते जिसे प्रसिद्धि, फूल की महक रही वो खुशबू।।

समाज सुधारक : अवनीश तिवारी

कभी-कभी कुछ बच्चे अपने व्यवहार में अन्य बच्चों से अलग होते हैं। उनमें सोचने तर्क करने और समझने की क्षमता अन्य बच्चों से कम होती है। उनमें चलने, बात करने और सामाजिक कौशल विकसित करने में सामान्य बच्चों की अपेक्षा अधिक समय लगता है।

वस्तुत: यह डाउन सिन्ड्रोम के कारण से होता है। यह आनुवांशिक गुणसूत्रों से जुड़ी समस्या है। जिसमें बच्चे के बौद्धिक और शारीरिक विकास में देरी होती है। प्रतिवर्ष भारत में सात-सौ में से एक बच्चा इस समस्या से प्रभावित होता है। चिकित्सक कहते हैं इस समस्या का कोई निदान नहीं है।

मध्यप्रदेश के इन्दौर में रहने वाले अवनीश इसी समस्या से प्रभावित विशेष बच्चे हैं। किन्तु मात्र इतनी ही बात होती तो यह बात इतनी उल्लेखनीय न होती। बस अवनीश की गिनती डाउन सिंड्रोम से प्रभावित सात सौ बच्चों में से एक बच्चे के रूप पर होती।

किन्तु हुआ ऐसा कि अवनीश के जन्म के साथ ही उनके माता-पिता ने जब देखा कि उनका मुखड़ा उनकी बोलचाल समझ और व्यवहार सामान्य बच्चों से अलग है, तो वे घबरा गए। कैसे पालेंगे हम इसको ? भविष्य में पालन-पोषण में होने वाली कठिनाइयों को ध्यान में रखकर उन्होंने अवनीश को अनाथालय में देकर उनसे छुट्टी पा ली।

बहुत सारे परिवारों में चलन है कि वे अपना जन्मदिन, विवाह की वर्षगाँठ आदि अनाथालय या निर्धन बस्तियों के अभावग्रस्त को भोजन कराकर या उन्हें उपहार देकर मानते हैं। एक दिन इंदौर के उसी अनाथालय में आदित्य तिवारी अपने पिता का जन्मदिन मनाने के लिए आए। वहाँ उन्होंने यूँ ही बातों-बातों में अनाथ बच्चों को गोद लेने की प्रक्रिया के बारे में भी पूछा। अनाथ बच्चों से मिलते बात करते जब आदित्य की दृष्टि अवनीश पर पड़ी तो वहाँ के लोगों ने अवनीश के बारे में उन्हें बताया कि अवनीश डाउन सिंड्रोम से प्रभावित है।

जिसके कारण उनके माता-पिता ने उन्हें अनाथालय में छोड़ दिया और इससे प्रभावित होने के कारण अवनीश के शरीर में इतनी सारी कठिनाइयाँ हैं कि उनका अधिक दिन तक जीवित रह पाना कठिन है। इसलिए ऐसे बच्चे को तो कोई भी गोद लेना पसंद नहीं करेगा।

आदित्य जो उस समय अविवाहित थे और एक अच्छी नौकरी में थे उन्हें यह बात लग गई कि अवनीश जैसे बच्चे को कोई भी गोद नहीं लेगा। उन्होंने तय किया कि वे अवनीश को गोद लेकर उनके एकल अभिभावक बनेंगे।

वहाँ से वापस आकर उन्होंने प्रक्रिया प्रारंभ की तो पता चला कि नियमों के अन्तर्गत वे अवनीश को गोद नहीं ले सकते हैं। उन्होंने कानूनी लड़ाई लड़ी और इन कानून में बदलाव करवाकर अवनीश को गोद ले लिया। इस तरह अवनीश एक जनवरी २०१६ को बीस महीने की सबसे कम आयु के ऐसे पहले बच्चे बन

गए, जिन्हें भारत में विशेष आवश्यकता वाले एकल अभिभावक द्वारा गोद लिए गया था।

इससे पहले अनाथालय में रहते हुए अवनीश बाल तस्करों के जाल में फँस गए थे। आदित्य ने सरकारी सहायता से इस गिरोह के विरुद्ध अभियान चलाकर अवनीश सहित अनेक अनाथ और दिव्यांग बच्चों को बाल तस्करों के चँगुल से बचाया। इसमें उन्हें मेनका गाँधी सहित अनेक सरकारी संस्थाओं के अधिकारियों का सहयोग मिला।

वहाँ से बाहर आकर एक दिन अवनीश और आदित्य इन्दौर के चिड़ियाघर गए। जहाँ घूमते हुए अवनीश को एक बाघ बहुत अच्छा लगा। लकी नाम के उस बाघ की आयु भी अवनीश के बराबर ही थी। बस 'सेव द टाइगर' प्रोजेक्ट के अंतर्गत उन्होंने उस बाघ को गोद ले लिया। लकी से मित्रता को लेकर अवनीश ने टाइगर कीपर का प्रशिक्षण भी ले लिया।

अब वे अनाथ और विकलांग बच्चों के लिए काम करने लगे। उन्होंने ऑनलाइन वार्ता करने के एक लोकप्रिय वैश्विक मंच टेडएक्स टॉक में दो बार सम्मिलित होने और तीन से चार वर्ष की छोटी आयु में टेडएक्स स्पीकर बनने के लिए आमंत्रण पाने की उल्लेखनीय उपलब्धि अर्जित की।

उन्होंने केन्द्र सरकार के सामने कई ऐसे मुद्दे उठाए जिनमें विकलांगता प्रमाण-पत्र प्राप्त करने की प्रक्रिया में होने वाली कठिनाई और अनाथालयों में छोड़े गए चिकित्सा स्थितियों और जन्म दोषों वाले बच्चों की वकालत करने जैसे मुद्दे थे। उनकी माँग रही कि अनाथ बच्चों को न केवल प्यारे घर प्रदान किए जाएँ बल्कि उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप उन्हें विशेष देखभाल और सहायता भी मिले।

अपनी प्रभावशाली पहल के माध्यम से अवनीश ने सार्वजनिक स्थानों, शैक्षणिक संस्थानों और स्वास्थ्य सेवा सुविधाओं में विकलांगों की पहुँच अच्छी बनाने के लिए सकारात्मक प्रयास किए। उन्होंने विकलांग लोगों के सामने आने वाली बाधाओं को पहचानते हुए विभिन्न मंचों पर जागरूकता बढ़ाने और विकालांगता अधिकारों की वकालत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अवनीश के आगे बढ़कर किए गए इन प्रयासों के कारण अनेक संस्थानों में विकलांगों को मिलने वाली सुविधाओं को लेक स्थितियों में सुधार हुआ है।

उन्होंने समावेशी शिक्षा पर एक राष्ट्रीय परिचर्चा आरंभ की। अवनीश ने प्राय: मूल धारा से अलग पड़े लोगों के अधिकारों और सम्मान की वकालत की। उनकी इन लोगों के साथ सहानुभूति और समर्पण ने व्यापक मान्यता प्राप्त की जिसके कारण उन्हें इस क्षेत्र में उनके असाधारण योगदान के लिए अनेक पुरस्कार सम्मान और प्रशंसा प्राप्त हुई।

अपने इन बदलाव के लिए किए जाने वाले प्रयासों से अवनीश दूसरों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन

गए और उन्होंने अनगिनत लोगों को अनाथ बच्चों और विकलांग लोगों के लिए न्यायसंगत समाज बनाने के मिशन में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। उनके इन लगातार किए जाने वाले समाजसेवी प्रयासों ने उन लोगों के जीवन पर भी एक अमिट छाप छोड़ी जिनकी वे सेवा करते हैं और उनका प्रभाव न केवल उन पर बल्कि समाज के अन्य लोगों पर भी लगातार पड़ा।

अवनीश ने समाजसेवा के क्षेत्र में एक हजार से भी अधिक कांफ्रेंसों में भाग लिया। इस संबंध में विश्व आर्थिक मंच के मुख्यालय जेनेवा सहित देश के विभिन्न भागों में जैसे लद्दाख, केरल, गुजरात, असम सहित अनेक स्थानों पर जाकर उन्होंने सक्रिय भागीदारी की।

अवनीश ने अपने प्रकृति के प्रति प्रेम के चलते विकलांग लोगों के अधिकारों के प्रति सामाजिक

जागरूकता की मुहिम को लेकर मात्र सात वर्ष की आयु में अप्रैल २०२२ को छः हजार मीटर की ऊँचाई पर माउण्ट एवरेस्ट के काला पत्थर बेस कैम्प पर जाकर झंडा फहराया। इस प्रकार डाउन सिंड्रोम से प्रभावित इतनी ऊँचाई तक पहुँचने वाले वे पहले बच्चे बने।

वर्ष २०२२ में अपनी असीमित क्षमता से कई लोगों को प्रेरित करते हुए वे श्रेष्ठ दिव्यांग बाल पुरस्कार के सबसे कम आयु के प्राप्तकर्ता भी बन गए।

अवनीश की उल्लेखनीय उपलब्धियाँ यहीं नहीं रुकीं। आठ वर्ष की आयु में उन्हें १५ सितम्बर २०२३ को डाउन५ सिंड्रोम अंतर्राष्ट्रीय एक्सीलैंस अवार्ड जयपुर में और टाटा चाइल्ड आइकॉन अवार्ड दिसम्बर २०२३ में मुंबई में दिए जाने के साथ–साथ अन्य अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

उनकी यह प्रेरक कहानी हमें हर व्यक्ति के अन्दर उपस्थित उन असीम संभावनाओं की याद दिलाती है कि चाहे कैसी भी परिस्थितियाँ क्यों न हों हम साहस न खोकर अपने लक्ष्य की ओर निरंतर चरण बढ़ाते रहें तो सफलता स्वयं हमारे पास आएगी।

अवनीश ने न केवल अपनी विपरीत स्वास्थ्य स्थितियों पर काबू पाया बल्कि ऐसा कुछ अनूठा कर दिखाया जो इस आयु में सामान्य स्वस्थ बच्चा भी सामान्यतः करने के बारे में नहीं सोच पाता।

देश की राष्ट्रपति महोदया ने उन्हें राजधानी दिल्ली में गणतंत्र दिवस २०२४ से पूर्व आमंत्रित कर प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार प्रदान किया। देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी इनसे भेंट की।

नन्हे मित्रो!

कैसा भी हो हाल, नहीं घबराना, हिम्मत रखना।
कभी जीत का कभी हार का, स्वाद पड़ेगा चखना।।
लगे अनवरत रहे अगर तो, मनचाहा पा लोगे।
लक्ष्य रहे आँखों के आगे, नहीं कभी तुम थकना।।

बैडमिंटन की राजकुमारी : जेसिका नेई सारिंग

अरुणाचल प्रदेश भारत का अत्यंत सुंदर उत्तर पूर्वी राज्य है। अरुणाचल का अर्थ है उगते सूर्य का पर्वत। भौगोलिक रूप से यह पूर्वोत्तर का सबसे बड़ा राज्य है। पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों की तरह इस प्रदेश के लोग भी तिब्बती बर्मी मूल के हैं।

अरुणाचल प्रदेश में हिन्दी भाषा बोलने का चलन बहुत बढ़ा है। हिन्दी अब अरुणाचल की लगभग जनभाषा बन चुकी है।

इसी राज्य में लोअर दिबांग घाटी नाम का एक जिला है। ब्रह्मपुत्र की सहायक नदी दिबांग की निचली घाटी में बसा यह जिला अपनी बर्फ से ढकी चोटियों, गहरी घाटियों उफनती नदियों और खूबसूरत जंगलों के लिए जाना जाता है। आबादी बढ़ने के साथ-साथ प्रशासनिक आवश्यकताओं के आधार पर वर्ष १९९९ में इस जिले के अलग-अलग भाग करके एक नया जिला पापुमपारे बना दिया गया।

यहाँ के अधिकांश निवासी जनजाति से हैं। इसी जिले के एक गाँव परबुक में भारत सारिंग और लेक लिबांग सारिंग का परिवार रहता है। ये बड़े ही सीधे-सादे सरल स्वभाव के लोग हैं। ये लोग मूल रूप से तो लोअर दिवांग घाटी से ही हैं। किन्तु अपनी नौकरी में पोस्टिंग के चलते ईटानगर के पास पापुमपारे में रह रहे हैं। उनका परिवार भी अधिक बड़ा नहीं है, घर में दो बेटी और एक बेटा।

खेलों को बढ़ावा देने की नीति 'कैच देम यंग' के अंतर्गत अरुणाचल राज्य सरकार ने भी अपने सभी जिलों में खेल केन्द्र खोले हुए हैं। ऐसा ही एक खेल केन्द्र पापुमपारे में भी था।

क्षेत्र के अन्य बच्चों के साथ भारत सारिंग की बेटी बेरल मेरी सारिंग भी वहाँ खेलने जाने लगी। अपनी बड़ी बहन के साथ उसकी चार वर्ष की छोटी बहन जेसिका भी उसके साथ हो लेती थी।

वहाँ अपनी बहन को खेलते देख उसका भी मन होता कि वह भी बैडमिंटन का रैकेट उठाकर शटल को मारे। किन्तु उस समय वह इतनी छोटी थी कि ठीक से रैकेट पकड़ना भी उसको नहीं आता था।

वह घर पर आकर अपने पिताजी और माँ से रोते हुए अपनी मातृभाषा 'आदि' में शिकायत करती कि ऐई, ऐनी, यानि कि माँ-पिताजी वहाँ पर बैडमिंटन सिखाने वाले कोच दिलीप गुरुंग मुझे बैडमिंटन नहीं खेलने देते हैं।

जेसिका के ऐई ऐनी भी हँसते हुए उससे कहते कि जरा बड़ी तो हो जाओ। फिर खेलना अभी तो तुम रैकेट जितना भी बड़ी नहीं हो। उसे ढंग से पकड़ना तो सीख लो। फिर खेलना।

जेसिका रोज नियम से बैडमिंटन कोर्ट में जाती और बड़े ध्यान से खिलाड़ियों को शटल कोर्ट में इधर से उधर करते हुए देखती। उसे यह खेल न जाने कितना अच्छा लगता था। आखिरकार उसकी लगन और उत्साह को देखकर दिलीप गुरुंग का दिल एक दिन पिघल गया और उन्होंने कोर्ट से कुछ दूरी पर रस्सी बाँधकर जेसिका के हाथ में रैकेट पकड़ा दिया। अब जेसिका किसी को भी अपने साथ खेलने के लिए कहती तो वह उसे मना नहीं कर पाता।

और फिर जैसे ही वह इतनी बड़ी हुई कि रैकेट पकड़कर शटल को नेट के उस पार मारने लगे, उसने बैडमिंटन कोर्ट में कदम रख दिया।

शीघ्र ही उसने अपने लगन और परिश्रम से इस खेल पर अपनी पकड़ बनानी प्रारंभ कर दी। उसके खेल में तकनीकि तौर पर कुछ ऐसी विलक्षणता थी

कि अधिक दिन तक उसकी प्रतिभा लोगों से छुपी न रह सकी। अब वे ही कोच दिलीप गुरुंग जो उसे छोटा होने के कारण पहले कोर्ट में आने से रोका करते थे उसे इस खेल की बारीकियाँ सिखाने लगे।

किन्तु यह सब जेसिका के माता–पिता के लिए आसान नहीं था। इसके लिए उन्हें रात को चार बजे उठकर कोर्ट पर पहुँचना होता था। जहाँ अभ्यास के बाद छः बजे जोसिका को वहाँ से वापस लाकर विद्यालय भेजना और अपने कार्यालय के निकलना होता था।

विद्यालय की छुट्टी के बाद फिर तीन बजे से पाँच बजे तक अभ्यास के लिए जाना होता था। यही नहीं विभिन्न टूर्नामेंटों में भाग लेने के लिए भी समय–समय पर कार्यालय से छुट्टियाँ लेकर जेसिका के साथ उन्हें जाना होता था।

जेसिका की यह खेल प्रतिभा लगातार चलने वाले मैचों के माध्यम से बाहर आई। सबसे पहले उसने राज्यस्तरीय एक बैडमिंटन चैम्पियनशिप को जीतकर सबका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। जिससे इस खेल के जानकारों को लगने लगा कि यदि जेसिका को ठीक ढंग से प्रशिक्षण दिया जाए तो वह इस खेल में बहुत आगे जा सकती है।

अब एक–एक करके उसने जो मैच जीतने प्रारंभ किए तो मात्र नौ वर्ष की आयु तक आते–आते उसने अपनी झोली में बीस से भी अधिक पदक जमा कर लिए। अण्डर–११, अण्डर–१३ और अण्डर–१५ श्रेणियों में राज्य स्तरीय बैडमिंटन प्रतियोगिताओं में उसने एक के बाद एक अपनी श्रेष्ठता को सिद्ध करते हुए पदक अपने नाम करने का शानदार ट्रैक रिकार्ड बनाया।

यह पदक उसने एकल और युगल दोनों प्रतिस्पर्धाओं में जीते। इस बीच जेसिका को ईटानगर में इन्डोनेशिया से एक वर्ष के लिए आए बैडमिंटन कोच मोहम्मद अरास रज्जाक से भी कोचिंग लेने का

अवसर मिला।

बिहार राज्य के गया में जून–जुलाई २०२३ में आयोजित योनेक्स–सनराइज ऑल इंडिया सब–जूनियर बैडमिंटन टूर्नामेंट अण्डर–१३ का स्वर्ण पदक और इसी वर्ष भुवनेश्वर ओडीसा अण्डर–१३ बालिका युगल वर्ग का स्वर्ण पदक जीतने के बाद जेसिका की पहचान राष्ट्रीय स्तर पर हो गई। जेसिका नेई सारिंग इन दिनों अंशुमान हजारिका बैडमिंटन अकादमी बैंगलूरू में कोचिंग ले रही है। जहाँ उसने एसबीडीए लियो स्पोर्टस स्मैश फेस्ट में भाग लेकर अण्डर–१३ गर्ल्स एकल २०२३ खिताब भी जीत लिया।

जेसिका की इतनी सारी एक के बाद एक मिली उपलब्धियों ने उसे खेल के क्षेत्र में मिलने वाले 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' के उम्मीदवार बनने के योग्य बना दिया। अरुणाचल प्रदेश राज्य बैडमिंटन एसोसिएशन, अरुणाचल ओलम्पिक एसोसिएशन आदि खेल से जुड़ी अनेक संस्थाओं ने जेसिका का नाम इस पुरस्कार के लिए प्रस्तावित किया।

जैसे ही भारत सरकार द्वारा इन पुरस्कार विजेता बच्चों का नाम घोषित किया गया। अरुणाचल में खुशी की लहर छा गई। अपने माता–पिता के साथ जेसिका ने दिल्ली जाकर देश की राष्ट्रपति के हाथ से प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार ग्रहण किया और अगले दिन अपनी एनी यानि माँ लेक लिबांग सारिंग के साथ प्रधानमंत्री जी से भी भेंट की।

गणतंत्र दिवस की ऐतिहासिक परेड का हिस्सा बनना उसके लिए अविस्मरणीय अनुभव था। दिल्ली के ऐतिहासिक स्थानों को देखकर और महत्वपूर्ण लोगों से मिलकर उसे बहुत अच्छा लगा। पुरस्कार लेकर जब जेसिका वापस अरुणाचल पहुँची तो उसका ईटानगर में रोइंग ब्लाक के गिडुम एरंग केबांग, रिंगोंग बांगो सोसाइटी, आदि बाने केबांग तथा डोलो एरंग केबांग कबीलों ने मिलकर जोरदार स्वागत किया गया। उन्होंने कहा कि गलत दिशा में भटक रहे हमारे युवाओं को जेसिका की उपलब्धि सकारात्मक प्रेरणा देगी।

उन्हें विश्वास है कि जिस तरह जेसिका ने राष्ट्रीयस्तर पर अरुणाचल प्रदेश का नाम ऊँचा किया है। इसी प्रकार से वह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बैडमिंटन के खेल में भारत देश का नाम भी उज्ज्वल करेगी।

इसके लिए ग्यारह वर्ष की सातवीं कक्षा में पढ़ने वाली छात्रा जेसिका नेई सारिंग बैंगलुरू में बैडमिंटन का उच्च प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है। उसका मानना है मेरी अगली मंजिल कॉमनवेल्थ खेल विश्व चैम्पियनशिप और ओलम्पिक खेलों में भाग लेकर देश के लिए स्वर्ण पदक जीतना है। इसके लिए मैं अपनी ओर से पूरा प्रयत्न करने में लगी हूँ।

नन्हे मित्रो!

एक राह को पकड़ चलाचल मंज़िल पा जाएगा।
मन में सच्ची लगन अगर हो तो मौका आएगा।।
बेहतर होगा, करो उसी को, जो मन को भाएगा,
सच्चे मन से काम किया वह दुनिया पर छाएगा।।

नवाचारी : सुहानी चौहान

इस वर्ष गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या को देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने विभिन्न क्षेत्रों में असाधारण उपलब्धि प्राप्त करने वाले जिन उन्नीस बच्चों को 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' प्रदान किया। उनमें से एक नाम दिल्ली की सुहानी चौहान का भी है।

सुहानी अभी मात्र सोलह वर्ष की है। अपने तीन भाई-बहिनों में सुहानी का नम्बर दूसरा है। उनसे बड़ा एक भाई अमेरिका में पढ़ता है। सुहानी अभी ग्यारहवीं कक्षा की छात्रा हैं। छोटी बहन दसवीं कक्षा में और उससे छोटा दस वर्ष का एक भाई है जो पाँचवीं कक्षा का छात्र है।

सुहानी चौहान ने किसानों के लिए पूरी तरह से सौर ऊर्जा से चालित कृषि वाहन विकसित किया है। आँकड़ों के अनुसार पर्यावरण अनुकूल यह वाहन देश में अभी चल रहे वाहनों के विकल्प के रूप में प्रयोग में लाया जाता है तो यह संभावित रूप से डीजल की लागत में अट्ठारह सौ करोड़ रुपये बचा सकता है और सालाना २७२००० मीट्रिक टन कार्बन ऑक्साइड उत्सर्जन को भी कम कर सकता है। जिसका कार्बन क्रेडिट में मूल्य ८४ करोड़ प्रति वर्ष है।

एसओएपीटी वाहन को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी सप्ताह जी-२० के तत्वावधान में विज्ञान २० शिखर सम्मेलन और भारत के युवा वैज्ञानिकों द्वारा पूरे भारत में शीर्ष नवीन परियोजनाओं में मान्यता दी गई है। नव प्रवर्तन के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए सुहानी चौहान को इस वर्ष का 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' प्रदान किया गया है।

सुहानी चौहान देश की राजधानी दिल्ली में रहती हैं। वे वहाँ के पुष्प विहार स्थित एमिटी इंटरनेशनल स्कूल के कक्षा ग्यारह में पढ़तीं हैं। बचपन से ही वह सहयोगी स्वभाव की रही। उनका मन पढ़ाई के साथ-साथ लोगों की भलाई की बातों में बहुत लगता।

जब सुहानी आठवीं कक्षा की छात्रा थीं तब विद्यालय की ओर से उनका जाना दिल्ली के पास मानेसर में हुआ। जहाँ उनकी भेंट खेत में कड़े परिश्रम से काम करते किसानों से हुई। वहाँ उन किसानों से बात करके सुहानी को उनकी कठिनाइयों के बारे में पता चला।

विज्ञान में रुचि रखने वाली सुहानी ने सोचा कि क्यों न कृषि के कार्यों के लिए कोई कम लागत वाला कृषि वाहन बनाया जाए जो छोटे किसानों के लिए लाभकारी हो। जो पर्यावरण अनुकूल तो हो ही बल्कि बहु उपकरण वाला भी हो।

बस फिर क्या था तीन वर्ष के परिश्रम के बाद शाला के इनक्यूबेशन सेन्टर में विज्ञान की छात्रा सुहानी ने सौर ऊर्जा से चलने वाला एक इको फ्रेंडली ट्रैक्टर बना लिया। सूरज की किरणों की ऊर्जा से चलने वाले इस चार पहिए वाले वाहन का नाम सो-एप्ट है। इसका उपयोग किसान बीज बोने, छिड़काव करने, सिंचाई करने और गड्ढा खोदने के साथ-साथ अन्य कृषि आवश्यकताओं के लिए कर सकते हैं।

सुहानी का कहना है कि भारत में उपयोग किए जाने वाले कुल ट्रैक्टरों से यदि एक प्रतिशत लोग भी इस तकनीक का उपयोग करेंगे तो इससे एक वर्ष में ही अट्ठारह सौ करोड़ रुपए के डीजल की बचत होगी। जबकि सौर ऊर्जा से चलने वाले इस वाहन में कार्बन उत्सर्जन शून्य होगा, जिससे प्रतिवर्ष लगभग दो

लाख बहत्तर हजार मीट्रिक टन कार्बन उत्सर्जित नहीं होगी। जिसका कार्बन क्रेडिट मूल्य लगभग दस मिलियन अमेरिकन डॉलर यानि कि भारतीय रुपयों में जिसकी कीमत चौरासी करोड़ होगी।

महत्वपूर्ण की बात यह है कि जब किसान इस उपकरण का उपयोग खेत में नहीं कर रहे होंगे तब वे वाहन पर लगे सौर पैनलों का उपयोग अन्य उपकरणों जैसे चारा काटने वाली मशीन चलाने, सेंट्रीफ्यूगल पम्प चलाने, पंखे चलाने, बिजली जलाने, मोबाइल फोन रिचार्ज करने के लिए बिजली देने के लिए भी कर सकते हैं अथवा उसको अन्य किसी को बेचकर आर्थिक लाभ कमा सकते हैं।

इस वाहन की एक विशेषता यह भी कि जो भी उपयोग में आने वाले उपकरण किसानों को चाहिए वे इसमें जुड़े हुए हैं और वे पोर्टेबल है। आवश्यकता पड़ने पर इन्हें सो-एप्ट वाहन में लगाया और निकाला जा सकता है।

ट्रैक्टर की तरह का चार पहिए वाला यह वाहन बहु उपयोगी है। इस वाहन की लागत भी बहुत अधिक न होकर बहुत ही कम है। जहाँ बाजार में ट्रैक्टर खरीदने के लिए छः से बारह लाख रुपए किसान को खर्च करने पड़ते हैं। वहीं सुहानी के बनाए वाहन की लागत मात्र तीन लाख के आस-पास आएगी। जिसे किसान इसकी उपयोगिता को देखते हुए आसानी से

चुका सकते हैं। इसे बाजार में लाने के लिए कुछ नया खोज सकूँ। मैं स्वयं का स्टार्ट-अप बनाना चाहती हूँ।

देशभर से चुने हुए उन्नीस बच्चों में दिल्ली राज्य से सुहानी चौहान अकेली हैं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी ने सुहानी चौहान के साथ देशभर के चुने हुए बच्चों को दिल्ली के विज्ञान भवन में 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' प्रदान किया।

अगले दिन प्रधानमंत्री जी ने इन बच्चों को भेंट के लिए अपने यहाँ बुलाया। उन्होंने सभी चयनित बच्चों को उनकी असाधारण उपलब्धियों के लिए प्रशंसा की और उनसे व्यक्तिगत रूप से बात करते हुए अच्छे भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दीं।

सुहानी से बात करते हुए प्रधानमंत्री जी ने प्रधानमंत्री सूर्योदय योजना के बारे में पूछा जो उन्होंने देशभर के एक करोड़ घरों पर सौर पैनल लगाने के लिए एक दिन पहले ही लांच की थी।

उन्होंने बताया कि गुजरात के मुख्यमंत्री रहने के दिनों से ही सौर ऊर्जा की क्षमता के प्रति उनका जुनून था। सुहानी ने बताया कि प्रधानमंत्री जी चाहते हैं कि अपनी छत पर सौर पैनल लगवाने वाले मकान मालिक चाहे तो अतिरिक्त ऊर्जा को बेचकर कमाई कर सकते हैं, जैसे कि मैं चाहती हूँ कि मेरे बनाए कृषि वाहन का उपयोग कर किसान अतिरिक्त ऊर्जा से कमाई कर सकते हैं।

प्रधानमंत्री जी ने प्रत्येक विजेता बच्चे को हस्ताक्षरित घड़ी, किताब और टेबलेट उपहार में दिया। सुहानी का मानना है कि यह राष्ट्रीय पुरस्कार पाकर हम सारे देश रूपी परिवार के सदस्य हो गए हैं।

नन्हे मित्रो!

करो भलाई कर पाओ तो, यह चरित्र का नपना।
पर ये ऐसा काम कि जिसमें पड़ जाता है तपना।।
औरों के सुख में अपना सुख मान लिया है जिसने.
सँवर गया है उसका जीवन जग हो जाता अपना।।

*

किलकारी के किरीट : मो. हुसैन

देश के ऐतिहासिक राज्य बिहार की समृद्धशाली राजधानी पटना में मोहम्मद हुसैन का घर है। वहाँ उनके पिता किताबों पर जिल्द चढ़ाने की एक दुकान में काम करते हैं। चार लड़कियाँ और दो लड़कों कुछ छः भाई-बहनों में मोहम्मद हुसैन का नम्बर पाँचवाँ है।

मात्र दस ग्यारह हजार रुपए मासिक आमदनी में आठ लोगों का परिवार चलाना पटना जैसे शहर में उनके पिता के लिए बहुत कठिन था। इसलिए हुसैन और घर के बाकी लोग पास-पड़ोस से आने वाले फाइल प्रोजेक्ट, त्योहारों पर सजावट का सामान बनाने और जिल्द चढ़ाने वाले कामों को पूरा करने में सहयोग करते और इस तरह घर की आर्थिक स्थिति सुधारने में अपना योगदान देते।

इतनी कम आमदनी में भी उन्होंने पढ़ाई के महत्व को समझते हुए अपने सभी बच्चों की पढ़ाई-लिखाई जारी रखी।

हुसैन ने बचपन से ही घर में होने वाले कामों में हाथ बँटाते हुए हस्त कौशल में रुचि लेना प्रारंभ कर दिया था। और स्थानीय स्तर पर होने वाली कला प्रतियोगिताओं में भाग लिया। जिसमें मिले प्रोत्साहन और पुरस्कारों ने उनकी इच्छाशक्ति को और बढ़ाया।

यह बात वर्ष २०१७ की है जब उनकी माँ उनकी बड़ी बहन की परीक्षा दिलवाने के लिए कॉलेज तक साथ गईं थीं। कॉलेज जाने के रास्ते में उन्होंने देखा कि एक चहार दीवारी के अन्दर एक बड़े से मैदान में बहुत सारे बच्चे प्रसन्न होकर खेलते दिखाई दे रहे हैं। उन्होंने अनुमान लगाया कि यह विद्यालय तो लग नहीं रहा है यह आखिर कौन-सी जगह है? जहाँ हर समय बच्चे प्रसन्न होकर खेलकूद करते शोर मचाते दिखाई देते हैं।

पता लगाया तो पाया कि यह 'बाल किलकारी' नाम की बच्चों की संस्था है। बारिश का मौसम था इसलिए मन में जिज्ञासा लिए वे वहाँ से वापसी में भी देखती निकलती चली गईं। अगले वर्ष बेटी की परीक्षा के समय फिर वे उधर से निकली तो फिर वही दृश्य दिखाई दिए। इस बार उन्होंने द्वार के पास जाकर जानकारी ली तो पता चला कि यहाँ कोई भी बच्चा बिना शुल्क और बिना भेदभाव के प्रवेश ले सकता है।

अगली बार ग्रीष्मकालीन शिविर में वे हुसैन को लेकर एक दिन बाल किलकारी में जा पहुँचीं। देखा तो वहाँ बच्चे तरह-तरह की गतिविधियों में खुशी-खुशी भाग ले रहे थे। हुसैन को यह देखकर बहुत अच्छा लगा। घर में होने वाले हस्तशिल्प के कामों को तो वह देखते और करते ही थे। यहाँ पर उसकी बारीकी और विस्तार के साथ-साथ नई-नई चीजों के सीखने का अवसर भी मिलने वाला था।

उस शिविर के बाद जब हुसैन ने वहाँ वार्षिक आधार पर प्रवेश लिया तो अपनी पसंद के विषय क्राफ्ट और स्केटिंग दो कलाओं का चयन किया।

दोनों कलाएँ उन्हें पसंद थीं। किन्तु जब स्केटिंग में आगामी प्रतियोगिताओं में अभ्यास के लिए अपने स्वयं के मँहगे स्केट्स खरीदने की आवश्यकता हुई जो घर की आर्थिक परिस्थितियों के कारण संभव नहीं था इसलिए अब हुसैन ने अपना सारा ध्यान क्राफ्ट को सीखने पर ही लगा दिया।

स्थानीय नगर और राज्यस्तरीय प्रतियोगिताओं में जब हुसैन अक्सर प्रथम, द्वितीय स्थान प्राप्त करने लगे तो उनकी प्रशिक्षक बिन्दु सिंह उन्हें क्राफ्ट में खूब मन से नई-नई तकनीक के बारे में सिखाने लगीं।

लगन से सीखते हुए हुसैन ने वर्ष २०१९ में न्यूज १८ द्वारा आयोजित पटना आर्ट कॉलेज की आजादी का अमृत महोत्सव रंगोली प्रतियोगिता में दूसरा स्थान प्राप्त किया। इसी बीच वर्ष २०१८-१९ में राष्ट्रीय स्तर पर सीसीआरटी नई दिल्ली द्वारा ऑन लाइन प्रतियोगिता आयोजित हुई। जिसमें सफल होकर हुसैन स्कालरशिप पाने के अधिकारी बने।

उन्हें लगभग साढ़े तीन हजार रुपए की स्कालरशिप मिलने लगी। उनके प्रशिक्षक को मिलने वाली धनराशि भी उन्हें किलकारी की ओर से दी जाने लगी इस तरह साढ़े बारह हजार रुपए पिछले चार वर्षों से उन्हें मिल रहे हैं। जिससे उनकी पढ़ाई का व्यय भी आसानी से निकलने लगा।

राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली इन प्रतियोगिताओं में इन बड़े-बड़े पुरस्कारों को जीतने का परिणाम यह हुआ कि हुसैन को बाल किलकारी संस्था ने अपना 'किलकारी क्राउन' चुन लिया। यह सम्मान 'बाल किलकारी' में होने वाली छब्बीस गतिविधियों में भाग लेने वाले सबसे प्रतिभाशाली बच्चे को प्रतिवर्ष प्रदान किया जाता है।

एनसीईआरटी नई दिल्ली द्वारा दस कलाओं में राष्ट्रीय स्तर पर 'कला उत्सव' प्रतियोगिता कराई गई। जिसमें वर्ष २०२२ में हुसैन निचले स्तर से राष्ट्रीय स्तर तक जीतते हुए चले गए। देश के सभी राज्यों के बीच ओडीसा में सम्पन्न हुई इस प्रतियोगिता में मोहम्मद हुसैन ने 'स्वदेशी खिलौने' बनाए थे। इस प्रकार उन्होंने सारे देश में प्रथम स्थान प्राप्त कर पच्चीस हजार रुपए का यह पुरस्कार जीता।

इन सभी विजेता कलाकारों को २०२३ में चौदह दिन के लिए दिल्ली में एनसीईआरटी कैम्पस में बुलाकर पुरस्कृत किया गया। इसी समय आए सभी बच्चों के बीच से हुसैन को स्कूल एजूकेशन कार्यक्रम में दो अक्टूबर को संसद में महात्मा गाँधी पर भाषण देने के लिए चुन लिया गया। भारतीय संसद में महात्मा गाँधी जी पर भाषण देने वाले देशभर से चुने हुए पच्चीस बच्चों में एक मोहम्मद हुसैन भी थे।

उस समय तो बाल किलकारी के सारे बच्चे खुशी से झूम उठे जब उन्होंने अपने एक साथी मोहम्मद हुसैन को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार के लिए चुने जाने की सूचना मिली। उन्हें देश की राष्ट्रपति जी के हाथों यह पुरस्कार लेने और गणतंत्र दिवस में होने वाली परेड में शामिल होने का आमंत्रण मिला था।

मोहम्मद हुसैन समय आने पर वे अपनी माँ और किलकारी भवन में अपनी प्रशिक्षिका बिन्दु सिंह के साथ दिल्ली के लिए उड़ चले। दिल्ली में उनकी ही तरह सारे देश के चुने हुए और बच्चे भी आए हुए थे। जिनके साथ मुलाकात कर मोहम्मद हुसैन को बहुत अच्छा लगा।

राजधानी के प्रसिद्ध अशोक होटल में रहते हुए उन्हें सभी बच्चों के साथ दिल्ली के प्रसिद्ध स्थानों की सैर करने का अवसर मिला। राजधानी दिल्ली में उस समय जनवरी की सर्दी और कोहरे के कारण से मौसम बहुत अच्छा था। उन सबके वहाँ रहने आने-जाने की व्यवस्था मानव संसाधन विकास मंत्रालय के निर्देशन में की गई थी।

उन्हें बताया गया कि २१ जनवरी को अभ्यास के बाद अगले दिन २२ फरवरी को उन्हें पुरस्कार के लिए विज्ञान भवन जाना होगा। सभी को एक-एक कर प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार का पदक व प्रमाण-पत्र देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी द्वारा प्रदान किया गया। वह दिन उनके लिए अविस्मरणीय हो गया।

अगले दिन नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जी की जयन्ती थी। उस दिन उनकी भेंट प्रधानमंत्री जी से होनी तय थी। अपनी-अपनी माताओं के साथ जब वे सब प्रधानमंत्री जी से मिलने गए तो प्रधानमंत्री जी सबसे एक-एक कर व्यक्तिगत रूप से मिले और सभी को टैबलेट उपहार में दिया।

जब मोहम्मद हुसैन से बात हुई तो प्रधानमंत्री जी ने उनसे उनके पहने हुए कपड़ों पर बने मधुबनी शैली के चित्रों के बारे में पूछा। हुसैन स्वयं मधुबनी चित्रकारी बनाने वाले अच्छे कलाकार हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रमोदी जी ने बताया कि ये बिहार की ही नहीं हमारे भारत देश की भी धरोहर है।

दिल्ली में रहते हुए उन सभी को प्रधानमंत्री संग्रहालय, राजघाट, भारत मंडपम् व दिल्ली के विभिन्न दर्शनीय स्थलों कुतुब मीनार, कमल मंदिर दिल्ली हाट आदि का भ्रमण करते हुए गणतंत्र दिवस की परेड में अभ्यास के साथ-साथ मुख्य परेड में भाग लेने के लिए ले जाया गया।

गणतंत्र दिवस की मुख्य परेड में उपस्थित होकर जब वे कर्त्तव्य पथ से होकर फूलों से सजी जीप में सवार होकर गुजरे तो सारे देश के लोगों ने तालियाँ बजाकर उनका स्वागत किया।

मोहम्मद हुसैन अपनी इन सारी उपलब्धियों का श्रेय अपने 'बाल किलकारी' संस्था से जुड़ने और अपनी प्रशिक्षिका बिन्दु सिंह को देते हैं। उनके मुख्य पुरस्कार समारोह में किलकारी की प्रमुख ज्योति परिहार की उपस्थिति ने उनकी खुशी को दोगुना कर दिया।

नन्हे मित्रो!

हम नन्हे पौधे धरती के ये अपनी फुलवारी।
हरा भरा कर देंगे इसको अपनी कोशिश जारी।।
खुशियों से भर जाए आँगन घर बाहर की दुनिया,
काम करेंगे हम ऐसे जो गूँज उठे किलकारी।।

*

जूडो चैम्पियन : लिनथोई चनंबम्

पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर में मायंग नाम का एक गाँव है। जो इसके पश्चिम इंफाल जिले में ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे स्थित है। गौहाटी से मात्र चालीस किलो मीटर की दूरी पर बसा यह गाँव किसी समय में 'काले जादू की धुरी' कहा जाता था। इस कारण यह आज भी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है।

इसी गाँव में एक किसान परिवार रहता है। जिनकी लिनथोई चनंबम् नाम की एक बेटी है। बचपन से ही लिनथोई को खेलने–कूदने घूमने और खाने–पीने का शौक था। कहने को वह लड़की थी किन्तु उसके सारे क्रियाकलाप लड़कों की तरह थे, और मुक्केबाजी और फुटबॉल जैसे सक्रिय ऊर्जा से भरे खेल उसे अपनी ओर आकर्षित करते थे। उसके घर में पहले से ही खेलों के प्रति प्रेम का वातावरण था।

उस गाँव के युवाओं में जूडो का खेल खूब लोकप्रिय था। जूडो सिखाने की दो–तीन अकादमी उस गाँव में थीं जो युवाओं को जूडो का प्रशिक्षण देती थीं। संयोग से लिनथोई के घर के पास भी जूडो की एक अकादमी थी।

बेटी लिनथोई चनंबम् की खेलों में रुचि देखकर उसके पिता चनंबम् इबोहल सिंह ने एक दिन उसे जूडो अकादमी में ले जाकर खड़ा कर दिया। जैसे तो लिनथोई मुक्केबाजी और फुटबॉल खेलती थी किन्तु उसके मन में कभी–कभी आता था कि क्यों न जूडो के खेल को ही व्यावसायिक खिलाड़ी के रूप में अपना लिया जाए। उसके पिताजी ने उस दिन उसकी यह दुविधा दूर कर दी और अब लिनथोई वहाँ से जूडो का प्रशिक्षण लेने लगी।

अब उसने अपने पूरी क्षमता और लगन के साथ इस खेल को अपना लिया था। नियमों की जानकारी होने के साथ ही उसने दाँव–पेचों का प्रयास आरंभ कर दिया। शीघ्र ही उसे सफलता मिलने लगी। राज्य में और राज्य के बाहर अपने आयु वर्ग में उसे लगातार सफलताएँ मिल रहीं थीं। ऐसे में ही एक जूडो प्रतियोगिता में उस पर मामुका किंजिलाशविली की दृष्टि पड़ी। जो आईआईएस जूडो के मुख्य प्रशिक्षक थे।

आईआईएस मतलब इंस्पायर इंस्टिट्यूट ऑफ स्पोर्ट संस्थान जो २०१४ में कर्नाटक के बेल्लारी जिले में हम्पी से लगभग तीस किलोमीटर दूर जेएसडब्ल्यू समूह द्वारा बयालीस एकड़ में बनाया गया है।

यहाँ मुक्केबाजी, जूडो, कुश्ती, एथलेटिक्स,

तैराकी जैसे पाँच ओलम्पिक खेलों के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है। इसका उद्‌देश्य भारत के खेलों का स्तर विश्व स्तर पर ले जाना है।

जिसके लिए यहाँ खिलाड़ियों को प्रशिक्षण, आवासीय सुविधाओं सहित बहुत सारे अवसर दिए जाते हैं। देश के नामी खिलाड़ी ओलम्पिक विजेता नीरज चोपड़ा और विनेश फोगाट जैसे खिलाड़ी वहाँ की सुविधाएं ले चुके हैं।

सारे देश में घूमकर यहाँ के कोच इन खेलों के लिए प्रतिभाओं की खोजकर उन्हें चुनते हैं। फिर उन्हें स्कालरशिप देकर ओलम्पिक के लिए तैयार करते हैं। ऐसी ही प्रतिभा पहचान खोज के लिए जब आईआईएस जूडो के मुख्य प्रशिक्षक मामुका

किंजिलाशविली मणिपुर पहुँचे तो देखकर हैरान रह गए कि यहाँ जूडो का खेल खूब फल-फूल रहा है।

बस फिर क्या था वे जुट गए ऐसे खिलाड़ियों की तलाश में जिन पर काम करके वे उसे ओलम्पिक पदक तक पहुँचा सकें। उन्हें खिलाड़ी की शारीरिक संरचना, उसका कौशल, उसकी योग्यता उसकी आयु आदि पैमानों पर उसे परखना था।

उन्हें लगा कि ग्यारह वर्ष की लिनथोई उस समय बहुत अच्छी आयु में है। इस आयु में वह उसे उचित प्रशिक्षण देकर उसमें बदलाव लाकर उसे अच्छे खिलाड़ी के रूप में तैयार कर सकते हैं।

वर्ष २०१७ में तेलंगाना में हुए जूडो के सब जूनियर राष्ट्रीय खेलों के आयोजन में उन्होंने लिनथोई का सुनहरा प्रदर्शन देखा इसके बाद उन्होंने उसे आईआईएस केन्द्र में जाने का निर्णय कर लिया।

आईआईएस के कठिन सधे हुए अनुशासित प्रशिक्षण ने लिनथोई के हुनर को सही दिशा दे दी। अब वह पूरे मन से वहीं रहकर प्रशिक्षण पाने लगी। जहाँ उसके लिए सभी आवश्यक उपकरण उचित प्रशिक्षण आहार और सुविधाओं की व्यवस्था उच्च कोटि की थी।

इसका परिणाम यह हुआ कि वर्ष २०१८ में सब जूनियर राष्ट्रीय चैम्पियनशिप में पहला पदक जीता और नवम्बर २०२१ में चण्डीगढ़ में आयोजित राष्ट्रीय सब जूनियर और कैडेट जूडो चैम्पियनशिप में लिनथोई ने स्वर्ण पदक पर अपना अधिकार जमाया।

जबकि लेबनान की राजधानी बेरुत में एशिया-ओशिनिया कैडेट जूडशे चैम्पियनशिप में कांस्य पदक जीता। जबकि बैंकॉक में सात जुलाई २०२२ में हुए एशियायी कैडेट एवं जूनियर जूडो चैम्पियनशिप में भाग लेकर वहाँ का स्वर्ण पदक उसने अपने नाम किया।

वह आईआईएस जूडो के हेड कोच जार्जियाई मामुका किजिलाशविली के मार्गदर्शन में देश-विदेश

के अनेक एक्सपोजर ट्रिप पर जा चुकी है। जिसमें सुकुबा, विश्वविद्यालय जापान, जार्जिया, लेबनान जैसी अनेक जगहें शामिल हैं।

वहीं दक्षिण पूर्वी योरोप के देश बोस्निया और हर्जेगोविना की पहाड़ियों से घिरी खूबसूरत राजधानी साराजेवो नगर में विश्व कैडेट जूडो चैम्पियनशिप २०२२ का आयोजन था।

यहाँ पर उसने पहले चारों मुकाबले लगातार इप्पोन जीतकर पूरे किए। इप्पोन जूडो के खेल में एक चाल है जो खिलाड़ी को दस अंक और सीधी जीत प्रदान करती है। इस तरह उसने अठारह वर्ष या उससे कम आयु वर्ग वाले जूडोकाओं के लिए विश्व कैडेट चैम्पियन-शिप के इस फाइनल मुकाबले में उन्होंने अपना स्थान पक्का किया था।

अब फाइनल में उसका मुकाबला-५७ किलो वर्ग में ब्राजील की रीस बियांका के साथ था। लिनथोई के लिए यह मुकाबला इसलिए कठिन था कि उसकी प्रतिद्वंद्वी रीस बियांका के पास कम से कम पन्द्रह अंतर्राष्ट्रीय मुकाबलों में भाग लेने का अनुभव था। साथ ही वह अपने से एक वर्ग ऊपर जूनियर वर्ग का मुकाबला खेलकर पाँचवें स्थान पर रह चुकी थी।

किन्तु इस फाइनल मुकाबले में लिनथोई ने वाजा-आरी के साथ आरंभिक खेल में बढ़त बना ली। मैच समाप्ति के कुछ सेकेण्ड पहले ही उसने शिदो प्राप्त कर लिया। अपने अभ्यास, परिश्रम और दृढ़ इच्छाशक्ति के दम पर उन्होंने इस मुकाबले को १-० से जीतकर स्वर्ण पदक पर अधिकार जमाया।

मात्र सोलह वर्ष की आयु में ही लिनथोई ने जूडो विश्व चैम्पियनशिप का यह स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रच दिया। क्योंकि इससे पहले किसी भी भारतीय जूडोका ने विश्व चैम्पियनशिप के किसी भी आयु वर्ग में एक भी पदक नहीं जीता था।

लिनथोई की यह उपलब्धि अद्वितीय थी। जिसके लिए जहाँ भारतीय खेल प्राधिकरण ने उसका सम्मान किया बल्कि भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा दिए जाने वाले 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' के लिए भी उसका नाम चुन लिया गया।

गणतंत्र दिवस से पूर्व देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी ने लिनथोई चनंबम् को दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित समारोह में प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार प्रदान किया। अगले दिन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी से भेंट कर लिनथोई गणतंत्र दिवस की ऐतिहासिक परेड में सम्मिलित हुई। जूडो ने विश्व स्पर्धा को जीतने के बाद लिनथोई ने लड़कियों के अपने नए ६३ किलोग्राम में हुई राष्ट्रीय प्रतियोगिता में फिर से स्वर्ण पदक जीता।

लिनथोई के कोच का कहना है कि अब तक के नए लक्ष्य हमने प्राप्त कर लिए हैं। भविष्य में मैं लिनथोई का मुकाबला जूनियर और सीनियर खिलाड़ियों के साथ कराऊँगा। ओलंम्पिक के लिए क्वालीफाईंग अंक पाने के लिए हम प्रयत्न करेंगे।

नन्हे मित्रो!

दृष्टि लगी जिसकी मंज़िल पर उसे कहाँ चुभते हैं शूल।
दूर अगर जाना तुमको है मंत्र यही, रहना है कूल।।
समय साथ देता है तो फिर सिर चढ़ती पाँवों की धूल।
मन में सच्ची लगन अगर तो राहों में बिछ जाते फूल।।

श्रद्धांजलि

शिक्षा जगत का चमचमाता एक सितारा अस्त

अवसान–एक ज्योतिर्मय जीवन का

जन्म ३ मार्च १९३० देहावसान ७ नवम्बर २०२४

– कृष्ण कुमार अष्ठाना

गुरुवार ७ नवम्बर! संध्या को अचानक एक हृदय विदारक समाचार मिला कि मान. दीनानाथ जी बत्रा नहीं रहे। नब्बे के दशक में विद्याभारती के साथ जुड़ने पर उनसे पहिला सम्पर्क आया था और फिर शिक्षा क्षेत्र की इस 'विभूति' ने अपने मन, वाणी और क्रिया की एक ऐसी अमिट छाप छोड़ी जिसे शब्दों में व्यक्त करना सम्भव नहीं। वे कुरुक्षेत्र के एक विद्यालय के प्राचार्य थे, राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित शिक्षक थे और विद्या भारती के अ. भा. महामंत्री।

मुझे 'देवपुत्र' के सम्पादन और प्रकाशन का दायित्व मिला था। उनके मार्गदर्शन में 'देवपुत्र' खूब फला–फूला। प्रकाशन संख्या में विश्व कीर्तिमान बनाने का यही कालखण्ड रहा।

हरियाणा अध्यापक संघ के महामंत्री से शुरु हुई, शिक्षण–क्षेत्र में उनकी मार्ग–दर्शन यात्रा अ. भा. 'स्काउट गाइड्स' के कार्यकारी अध्यक्ष, 'भारतीय शिक्षण मण्डल' के अ. भा. संयुक्त महामंत्री, 'विद्याभारती' के अ. भा. महामंत्री फिर उपाध्यक्ष 'पंचनद शोध संस्था' के निदेशक जैसे अनेक दायित्वों का निर्वाह करते हुए 'शिक्षा, संस्कृति उत्थान न्यास' के संस्थापक और अध्यक्ष तक पहुँची।

सुदीर्घ कालीन अस्वस्था में भी वे कभी थके नहीं, थमे नहीं। अनेक पुस्तकों का लेखन किया, भरपूर प्रेरक साहित्य और बाल एवं किशोरों के लिए बोध–कथायें उपलब्ध कराई। दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने उनकी साहित्य सेवाओं के लिए वर्ष २०१२ में उन्हें सम्मानित किया और न जाने कितने सम्मानों से वे सम्मानित हुए।

'शिक्षा में भारतीयता' का संकल्प लेकर एक आजीवन व्रती 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० की भारतीय शिक्षा जगत में स्वीकृति देखकर हमसे विदा ले गया। शेष बचे कार्य को हम पूरा करेंगे इस संकल्प के साथ विनम्र श्रद्धांजलि। ✻

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/११/२०२४ प्रेषण तिथि ३०/११/२०२४ प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार है।
एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-
एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

उत्तम कागज पर श्रेष्ठ मुद्रण एवं आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी